(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 54, अंक 9, मार्च, 2019
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

सबका मालिक एक है

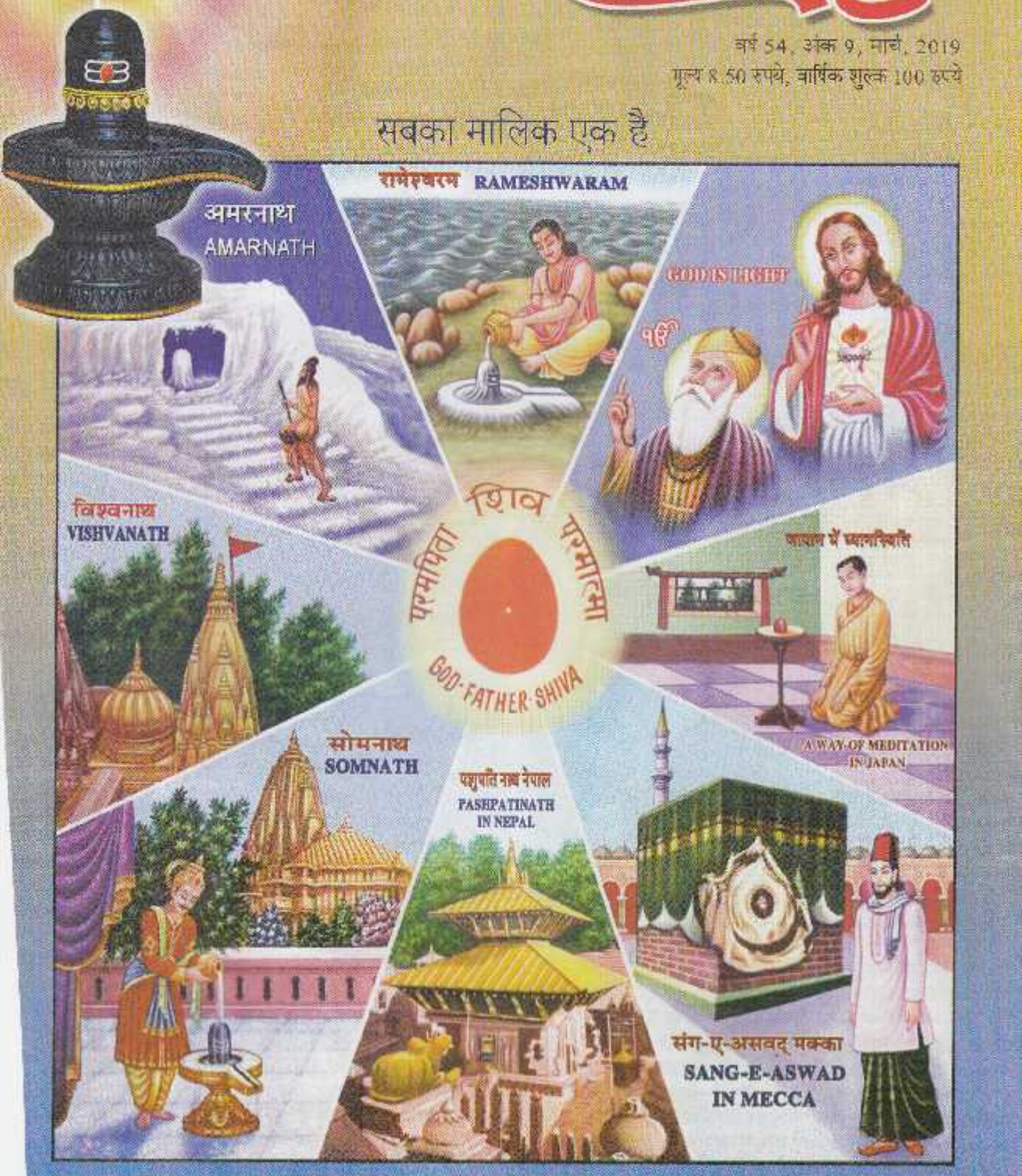

1. शान्तिवन- नोबल अवार्ड के संस्थापक भ्राता गणेशिया जी, सिरोही के महाराजा भ्राता रघुवीर सिंह के द्वारा राजयोगिनी दादी जानकी जी को नोबल अवार्ड से सम्मानित कराते हुए। साथ में ब्र.कु. भ्राता निर्वैर जी तथा ब्र.कु. भ्राता भरत जी। **2. भुवनेश्वर-** उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता गणेशीलाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. भारतभूषण भाई। साथ में ब्र.कु. लीना बहन। **3. राजनांदगाँव-** छत्तीसगढ़ के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री भ्राता भूपेश बघेल के प्रथम नगर आगमन पर ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पुष्पा बहन। **4. बडोदरा (अटलादरा)-** गुजरात के मुख्यमंत्री विजय भाई रूपाणी जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. अरुणा बहन। **5. शान्तिवन (आबू रोड)-** यशवन्तराव चौहान विश्वविद्यालय तथा ब्रह्माकुमारीज के शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित दीक्षांत समारोह का उद्घाटन करते हुए अन्नामलाई विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार प्रो. डॉ. रविचन्द्रन, प्रो. डॉ. उमेश, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. शीलू बहन तथा अन्य। **6. नागपुर-** विश्वशान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में 'इमोशनल फिटनेस' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शिवानी बहन। **7. आगरा-** डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय में आयोजित 'रंग विविधा' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कुलपति डॉ. अरविन्द दीक्षित, प्रो. विनीता सिंह, निदेशक ललित कला संस्थान, बहन पल्लवी, उप-निदेशक पर्यटन, ब्र.कु. अश्विना बहन, बहन ज्योति खंडेलवाल तथा अन्य। **8. पणजी (गोवा)-** भक्ति महोत्सव का उद्घाटन करते हुए गोवा के टाउन तथा कन्ट्री प्लानिंग मंत्री भ्राता विजय सरदेसाई, ब्र.कु. शोभा बहन तथा अन्य।

शिवरात्रि का आध्यात्मिक संदेश

परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि भारतवर्ष अध्यात्म प्रधान देश है। यहाँ के सभी व्रत और त्योहार परमपिता परमात्मा के दिव्य अवतरण तथा अलौकिक कार्य-कलापों की स्मृति दिलाते हैं और एक आध्यात्मिक सन्देश लेकर आते हैं।

शिव जयन्ती निराकार परमपिता त्रिमूर्ति परमात्मा शिव के दिव्य अलौकिक अवतरण का पावन स्मरणोत्सव है। फाल्गुन, वर्ष का अन्तिम मास होता है। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी वर्ष की प्राय: अन्तिम अन्धेरी रात होने के कारण कल्पान्त के समय व्याप्त घोर अज्ञान-अन्धकार और तमोप्रधानता की प्रतीक है। कल्पान्त में जब सृष्टि पर अज्ञान-अन्धकार छाया होता है, काम-क्रोधादि महाविकारों के वशीभूत होकर मानव मात्र घोर दु:खी एवं अशान्त हो जाते हैं, असुरों के अत्याचार से मानवता त्रस्त हो उठती है, तब पुन: ज्ञान-प्रकाश फैला कर पावन देव-सृष्टि की स्थापनार्थ ज्ञान सूर्य निराकार परमात्मा शिव का दिव्य, अलौकिक अवतरण होता है। मृत्युन्जय परमात्मा शिव अजन्मे हैं अर्थात् अन्य आत्माओं के सदृश्य माँ के गर्भ से जन्म नहीं लेते हैं। परन्तु कल्पान्त में दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना के लिए वे परकाया प्रवेश करते हैं। स्वयंभू परमात्मा शिव योगबल से प्रकृति को वश में करके एक साकार, साधारण, वृद्ध तन में दिव्य प्रवेश करते हैं और उसका नाम रखते हैं 'प्रजापिता ब्रह्मा'। निराकार परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा ज्ञान-यज्ञ रचते हैं जिसमें सारी आसुरी सृष्टि की आहुति पड़ जाती है। इसी ज्ञान-यज्ञ से वे दैवी प्रजा की – प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली अर्थात् ब्रह्माकुमारों और ब्रह्माकुमारियों की रचना करते हैं जिनसे सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि का नया चक्र चालू होता है।

आज पुन: धर्म की अति ग्लानि हो चुकी है। मानवमात्र का चारित्रिक, नैतिक और आध्यात्मिक पतन चरम सीमा पर पहुँच चुका है। विज्ञान का अति विकास और जनसंख्या की अति वृद्धि हो रही है। ऐसे समय में कल्प की महानतम घटना और दिव्य सन्देश सुनाते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है कि कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर ज्ञान सागर, करुणा के सागर, पतित पावन, सदा जगती ज्योति स्वयंभू परमात्मा शिव, हम जीवात्माओं की बुझी ज्योति को पुन: प्रज्वलित करने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के साकार, साधारण, वृद्ध तन में दिव्य प्रवेश कर

शेष भाग पृष्ठ ... 34 पर

अमृत-सूची

- शिवरात्रि का आध्यात्मिक संदेश 3
- राजनीति – तब और अब (सम्पादकीय) 4
- रूढ़ियों व पूर्वाग्रहों को चुनौती 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के 8
- पत्र सम्पादक के नाम 10
- सिद्धि पाने के लिए बुद्धि का सशक्तिकरण करो 11
- नया जन्म 14
- प्रभु-पालना के चमत्कार 15
- बाबा अब तू ही संसार है (कविता) 16
- सच्चे पिता ने दी जीवन जीने की वजह 17
- सच्ची सुन्दरता 19
- हर दर्द की दवा मुसकान 20
- तुम्हारे प्यार की दौलत (कविता) 21
- एक अनोखा संग्रहालय – शक्तिनिकेतन 22
- अहंकार पर विजय 24
- देवताओं का सोना और जागना 27
- ज्ञान रंग बरसे 28
- श्रद्धांजलि 29
- निराश न हों 30
- आज का कर्म, कल का भाग्य 31
- सचित्र सेवा-समाचार 32

राजनीति – तब और अब

आधुनिक समय में कुछ लोग यह कहते हुए सुने जाते हैं कि अब राजनीति में कोई नैतिक मूल्य नहीं रहे। कुछ अन्य लोग इस चर्चा में अपने इस विश्वास को व्यक्त करते हैं कि राजनीति में बहुत बार नैतिकता को तिलान्जली देनी ही पड़ती है। अब सोचने की बात है कि इन दोनों विचारों में से कौन-सा विचार ठीक है। क्या राजनीति का नैतिकता से अटूट मेल है या उस पर ऐसा कोई भी अंकुश नहीं है?

'राजनीति' शब्द पर विचार

हम देखते हैं कि 'राज' शब्द से जो शब्द संयुक्त होते हैं, उनका अर्थ प्राय: महानता-सूचक हो जाता है। उदाहरण के तौर पर 'राजवैद्य' की उपाधि उसे दी जाती है जो कि अन्य वैद्यों की अपेक्षा औषधि विज्ञान में विशेष प्रतिभाशाली हो अथवा किसी राजा का वैद्य हो। इसी प्रकार 'राज ज्योतिषी', 'राजर्षि' और 'राजयोगी' शब्द भी उस-उस श्रेणी में उच्च ज्योतिषी, ऋषि और योगी के लिए प्रयोग होता है अथवा 'राजयोगी' उसे भी कहते हैं जो सर्वश्रेष्ठ योग (मनोयोग) का अभ्यास करता है।

इसी प्रकार 'राजपथ' शब्द बड़े मार्ग, जिसे अंग्रेजी में 'हाई वे' अथवा मेन रोड और उर्दू में 'शाह राह' कहते हैं, के लिए प्रयोग होता है। इसी परिपाटी को ध्यान में रखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि 'राजनीति' शब्द भी एक श्रेष्ठ नीति ही का वाचक होना चाहिए। वैसे भी हम देखते हैं कि श्रेष्ठ व्यवहार को 'राजकुलोचित व्यवहार' कहा जाता है। इतिहास की एक घटना भी इस विषय में प्रसिद्ध है। बताया जाता है कि सिकन्दर और पोरस की लड़ाई में जब पोरस हार गया और उसको सिकन्दर के सामने लाया गया तो सिकन्दर ने उससे पूछा, 'बताओ आपके साथ क्या व्यवहार किया जाये?' कहते हैं कि पोरस ने उत्तर दिया, 'जैसे एक राजा को दूसरे राजा के साथ करना चाहिए।' इस पर सिकन्दर ने उसे मुक्त करने की आज्ञा दे दी। गोया उसने यह प्रदर्शन किया कि राजा को क्षमाशील, उदारचित्त और साहसी लोगों का प्रशंसक होना चाहिए। इन सब बातों को देखते हुए भी हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सम्भवत: प्रारम्भ में 'राजनीति' शब्द एक ऐसी 'नीति' के लिए उपयुक्त होता रहा होगा जो सबसे श्रेष्ठ हो और जिसे राजा स्वयं भी व्यवहार में लाता हो।

ऊपर हमने सिकन्दर का जो उदाहरण दिया है, वह तो उस काल से सम्बन्धित है जब राजा लोगों में भी लोभ, हिंसा आदि भाव आ गये थे। तब भी उनके जीवन में कुछ तो सिद्धांत थे, यहाँ तक कि लड़ाई के लिए भी कुछ नियम बने हुए थे। परन्तु दिनोंदिन गिरावट आते-आते अब तो हालत ही कुछ और है।

राजा था विष्णु का प्रतिनिधि

प्रारम्भ अर्थात् सतयुग में राजा विष्णु का प्रतिनिधि था क्योंकि सतयुग में राजा का चरित्र तथा व्यवहार, मर्यादा और दिव्यता से युक्त होता था। त्रेतायुग के अन्त तक भी राजा श्रेष्ठाचारी होता था और 'राजनीति' शब्द पितृवत्, स्नेह-युक्त नीति से प्रशासन करने का वाचक था। 'यथा राजा तथा प्रजा' की नीति-सम्बन्धी उक्ति के अनुसार, तब नैतिकता के मामले में राजा ही गणनायक होता था। विवेक भी कहता है कि ऐसा होना उचित भी था क्योंकि तब राजा ही को न्याय भी करना होता था और जो दूसरों को अनैतिक व्यवहार के लिए दंडित करने का अधिकारी हो, उसका स्वयं अपराध-रहित तथा चारित्रिक दोषों से मुक्त होना जरूरी ही तो था। अंग्रेजी भाषा में राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक कहावत है कि राजा

कभी अपराध नहीं कर सकता। आज तक भी इंग्लैंड में कानूनी तौर से ऐसा ही माना जाता है। यद्यपि वास्तव में यह उक्ति सतयुग और त्रेतायुग के प्रागैतिहासिक काल के बारे में है जब राजा धर्म-निष्ठ अर्थात् चरित्रवान हुआ करता था और वह मन, वचन, कर्म से 16 कला पूर्ण देवता ही था। तब राजनीति और धर्मनीति अलग-अलग नहीं थी बल्कि राजनीति और अर्थनीति धर्माचरण पर ही आधारित थीं। यहाँ 'धर्म' शब्द का अर्थ किसी मत-पंथ या पूजा-पद्धति के अर्थ में प्रयोग नहीं हुआ बल्कि व्यवहार की श्रेष्ठता और आध्यात्मिक सत्यता ही के अर्थ में हुआ है। अत: उस समय का राज्य सही अर्थ में धार्मिक होते हुए भी किसी धर्म पक्ष पर आधारित नहीं था। इसी अर्थ में ही उस युग के राजा 'धर्म-रक्षक' थे और उस समय राजा के अधिकार दिव्य अधिकार थे।

राजनीति के बजाय प्रजानीति

परन्तु समय के फेर से परिस्थितियाँ ऐसी बदलती गयीं कि राजा तो दिव्य नहीं रहे, न वे ईश्वर या विष्णु के प्रतिनिधि रहे, न ही धर्म के रक्षक बल्कि धीरे-धीरे शैतान के प्रतिनिधि बनने लगे और फिर भी देवताओं के राजा के जैसे अधिकार माँगने लगे। इंग्लैंड के इतिहास में राजा के दिव्य अधिकार, धर्म रक्षक और ईश्वर के प्रतिनिधि के विषय को लेकर काफी संघर्ष हुआ। और फिर, एक समय ऐसा आया जब राजा को राजसिंहासन से भी उतार दिया गया और शासन की बागडोर प्रजा ने अपने प्रतिनिधियों के हाथ में दे दी। अत: अब राजनीति की बजाय प्रजानीति चलने लगी यद्यपि उसका नाम अब भी राजनीति ही रहा क्योंकि वह राज-कारोबार से सम्बन्धित नीति की वाचक थी।

वास्तव में युग-युगान्तर से अपने देश अथवा शासन क्षेत्र में विधि-विधान बनाये रखना, अपराध को रोकना और न्याय करना, राजा के और बाद में राजनीतिज्ञों के कर्त्तव्य माने जाते रहे और उसके लिए अपनाई गई नीति ही राजनीति परिगणित की जाती रही है। परन्तु अब तो नीति ही ऐसी है कि जिससे अपराध और मुकदमे बढ़ते हैं और कानून की लकीर मिट जाती है।

> 'यथा राजा तथा प्रजा' की नीति-सम्बन्धी उक्ति के अनुसार, नैतिकता के मामले में राजा ही गणनायक होता है। क्योंकि राजा को न्याय करना होता है और जो दूसरों को अनैतिक व्यवहार के लिए दंडित करने का अधिकारी हो, उसका स्वयं अपराध-रहित तथा चारित्रिक दोषों से मुक्त होना जरूरी है।

अब शिवबाबा द्वारा नैतिकता पूर्ण राज्य की पुन: स्थापना

कानून का पालन और कानून की कदर तो थोड़े-से ही लोग करते हैं जिन्हें लोग डरपोक या असमर्थ मानते हैं। स्वयं राजनीति का व्यवहार करने वाले लोग अपने बनाये हुए नियमों का सबसे ज्यादा उल्लंघन करते हैं और राजा अपराध से ऊपर है – इस पुरानी उक्ति के नये अर्थ अनुसार उन्हें कानूनी दृष्टि से प्राय: निरपराध माना जाता है। गोया आज राजनीति ऐसी बन गई है जिसके सामने नैतिकता ठहर भी नहीं सकती। ऐसी ही अवस्था में अब शिव बाबा फिर नैतिकतापूर्ण राज – रामराज अथवा स्वराज्य स्थापन करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं और नर-नारी को पावन बनाने का उपाय कर रहे हैं। परन्तु कुछ थोड़े ही व्यक्ति हैं जो अलबेलेपन को छोड़कर अपने कल्याण को सामने रखते हुए प्रतिदिन ईश्वरीय ज्ञान द्वारा पवित्र बनने का पुरुषार्थ करते है। वरना बहुत-से लोग समयाभाव, स्थान की दूरी, शरीर की अस्वस्थता अथवा अन्य कोई कारण बताकर रुक जाते हैं इस प्रकार वे ईश्वरीय सहायता से वंचित हो जाते हैं परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि कारणों का निवारण करने वाले ही महानता की मंजिल को हासिल कर पाते हैं। ■■■

रूढ़ियों व पूर्वाग्रहों को चुनौती

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

भारत के आदिकाल में नर-नारी में समानता थी बल्कि यूँ कहिए कि नारी का स्थान नर से ऊँचा था। तभी तो देवता से पहले देवी का नाम आता है। उस समय सिंहासन पर श्रीनारायण के साथ श्रीलक्ष्मी भी विराजमान दिखाई जाती है। कोई भी देवी पर्दानशीन नहीं दिखाई जाती है। अतः इतना तो निश्चित है कि परमात्मा पिता ने नारी वर्ग को पर्दानशीन नहीं बनाया था। ना ही नर और नारी के जन्म के समय ऐसा कोई अन्तर है कि एक पर्दारहित पैदा होता है और दूसरी पर्दानशीन। तो फिर यह पर्दा कहाँ से आया?

यह सत्य है कि शहरी संस्कृति में पली-बढ़ी नारी आज पर्दे की जकड़ से मुक्त हो चुकी है। वे कस्बे जहाँ शहरी संस्कृति पसरती जा रही है, वहाँ प्रतिशत आधा-आधा नजर आता है परन्तु दूर-दराज के छोटे गाँवों में आज भी नारी को पर्दे से मुक्ति नहीं मिली है। सवाल यह है कि यह पर्दाप्रथा कहाँ से आई, कौन लाया, क्यों आई? इतिहास के पन्ने पलटते है तो जानकारी मिलती है कि विदेशी आक्रमणकारियों ने जब नारी की अस्मिता पर हाथ डालना शुरू किया तो नारी कहीं से भी दिखे ना, इस प्रकार छिपाने के प्रयास में यह प्रथा प्रारम्भ हुई। परन्तु आजकल तो आक्रमण होते नहीं, फिर क्यों प्राचीनकाल का भय हमारा पीछा कर रहा है? नारी किसी काल्पनिक भय को ओढ़े क्यों जी रही है?

कुछ लोगों का कहना है कि विदेशी आक्रमणकारियों के जाने के बाद भी नारी को पर्दा इसलिए करवाया गया कि कहीं ससुराल पक्ष के बड़े लोग जैसे ससुर, जेठ आदि उसके चेहरे को देख आकर्षित ना हो जाएँ। अगर यह कारण है तो फिर नारी के लिए ससुराल, घर ना होकर दुश्मनों का अड्डा हो गया जहाँ हरेक से उसे अपने को छिपाए-छिपाए रखना पड़ता है। नारी देवर से घूँघट नहीं निकालती (अपवाद हो सकते है) क्योंकि वह पति से छोटा है और पुत्र समान है। यदि पति से छोटे भाई उसके लिए पुत्र समान हो सकते हैं तो पति से बड़े भी, पिता समान हो सकते हैं, उनसे भय क्यों? पर्दा क्यों? कुछ लोगों का कहना है कि पर्दा करना, घर-परिवार-समाज के बड़ों का सम्मान करना है। परन्तु, किसी को देखकर मुँह पर कपड़ा डाल लेना, यह तो सम्मान से ज्यादा अपमान की महसूसता कराता है। जो भी हो, यह नारी के सम्मान को नष्ट करने वाली हानिकारक प्रथा है।

कई मन्दिरों और सभी गुरुद्वारों में दर्शनार्थ जाने वाले भक्तों – चाहे स्त्री या पुरुष – को सिर पर कपड़ा ढकना होता है। सिर ढकना सम्मानसूचक हो सकता है परन्तु मुँह ढकना कतई नहीं। अतः नर और नारी की समानता के पक्षकारों को पहले अपने घर में पर्दे की ओट में बैठी नारी को मुक्ति का आनन्द लेने की अनुमति देनी चाहिए क्योंकि चैरिटी बिगिन्स एट होम (परोपकार घर से शुरू होता है)।

काम विकार – नर और नारी दोनों का शत्रु

संसार में सारे दुख – चाहे नर के या नारी के – पाँच विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और इनके बाल बच्चे) के कारण है। इनमें से भी क्रोध दो पुरुषों या दो स्त्रियों के बीच हो सकता है, लोभ भी दो पुरुषों या दो स्त्रियों के बीच हो सकता है, मोह और अहंकार भी दो स्त्रियों या दो पुरुषों के बीच हो सकता है परन्तु काम विकार ही एकमात्र ऐसा विकार है जिसे तबाही मचाने के लिए नर और नारी चाहिएँ। अगर कोई नारी अकेली है, सुनसान-सा क्षेत्र है तो वो बाकी किसी विकार क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के बारे में चिन्तित नहीं होती। वह किसी नारी या नर से भी भयभीत नहीं होती। उसे भय इस बात का होता है कि यह काम विकार किसी नर-राक्षस में प्रवेश होकर उस पर वार न कर दे। यदि हम कहें कि नर, नारी का शत्रु है तो एक भाई भी तो नर है, वह नारी का शत्रु क्यों नहीं है? स्पष्ट है कि कोई भी पुरुष उसका शत्रु नहीं है, शत्रु है काम विकार अर्थात् काम विकार से ग्रसित नर-राक्षस।

काम विकार से मुक्त कोई व्यक्ति भाई बनकर

उसी नारी की सहायता करता है और काम विकार से पिशाच बना कोई व्यक्ति उसी नारी के भय का, उस पर अत्याचार का कारण बनता है। तो शत्रु यह विकार है। इस विकार की उत्पत्ति का मूल कारण है किसी भी नारी या नर को मात्र शरीर की दृष्टि से देखना। देह-दृष्टि ही दुख की उत्पत्ति का मूल कारण है। परन्तु शरीर चाहे नारी का या नर का, पाँच तत्वों से बना है। क्या ऐसा विभाजन है कि यह जल नारी शरीर निर्मित करेगा और वह जल नर शरीर निर्मित करेगा। यह ऑक्सीजन नर शरीर के लिए है और वह ऑक्सीजन नारी शरीर के लिए है। यह मिट्टी नर बनाएगी और वह मिट्टी नारी शरीर बनाएगी। नही ना। और आत्मा के जाने के बाद जले हुए शरीर की राख में भी कोई पहचान नहीं होती कि यह नर शरीर की राख है या नारी शरीर की। अत: देह के भीतर विराजमान आत्मा ही शाश्वत है और वह भी कभी नर और कभी नारी चोला धारण करती है। अत: एक आत्मा को दोनों प्रकार के जीवन का अनुभव बारी-बारी होता रहता है। यह ज्ञान बुद्धि में रहे तो दृष्टि आत्मा पर रहती है और तब काम विकार को किसी मानव को राक्षस या पिशाच बनाने का मौका मिल ही नहीं सकता।

बुराइयों के लिए लाइसेंस

कई बार कई माताएँ-बहनें-भाई कहते हैं, बहन जी, हम आपकी तरह सन्त तो हैं नहीं, हम तो गृहस्थी हैं और गृहस्थ व्यक्ति को झूठ तो कभी-कभी बोलना ही पड़ता है, लोभ-लालच भी करना पड़ता है, क्रोध भी आ ही जाता है और मोह तो स्वाभाविक ही है। इस प्रकार गृहस्थ जीवन की आड़ लेकर वे मानो इन विकारों के साथ जीने का लाइसेंस इशु कर लेना चाहते हैं। ठीक है, यदि गृहस्थ जीवन में रहते ये विकार और इनके बाल-बच्चे स्वाभाविक हैं तो फिर हम कभी-कभी ऐसी शिकायतें क्यों करते है कि मेरी सास लालची बहुत है, मैं थोड़ा भी कुछ खर्चा कर लूँ तो उसे सुहाता नहीं है। अरे, आप ही तो कहते हो, गृहस्थ में रहते थोड़ा तो लालच करना ही पड़ेगा। कभी-कभी कोई भाई भी यह शिकायत करता है कि मेरे पिता में जिद बहुत है, वे हमारी ठीक बात को भी मानते नहीं है। अरे, आप ही तो कहते हो, गृहस्थ जीवन में थोड़े-बहुत जिद-हठ आदि विकार तो रहते ही हैं फिर कभी-कभी कोई माता भी कहती है, मेरे पुत्र में क्रोध बहुत है, सबकी शान्ति भंग कर देता है। अरे आप ही तो कहते हो, गृहस्थ जीवन में थोड़ा-बहुत क्रोध तो रहेगा ही। फिर शिकायत क्यों? फिर तो हमें यह कहना चाहिए कि हम तो गृहस्थ जीवन वाले हैं, सासू जी, अपने पास तो लालच करने का लाइसेंस है, आप भी करो, मैं भी करूँ। पिताजी, अपन तो गृहस्थ जीवन वाले हैं। जिद्द-हठ करने का लाइसेंस अपने पास है। आपने किया तो क्या हुआ और मैं भी कर लूँ तो इसमें बुराई क्या है? और पुत्र को भी यही कहिए, बेटा, हम तो गृहस्थी हैं, तेरे को गुस्सा आता है तो क्या बुरा है, तुम भी करो, मैं भी करूँ, अपने पास तो लाइसेंस है।

दोहरा मापदण्ड क्यों?

क्या हम ऐसा कह सकते है? नहीं ना। तो कहीं हम यह तो नहीं चाहते कि घर-गृहस्थ की आड़ में विकारों को छूट का लाइसेंस केवल मेरे को मिले। मैं कितना भी, किसी भी विकार के वशीभूत होऊँ, उसे सब मान्यता दें परन्तु दूसरा कोई भी वशीभूत न हो। पर यह कैसे हो सकता है? यदि मैं मोहवश अपने बच्चे को बढ़िया-बढ़िया खिलाना चाहती हूँ तो इसे गृहस्थ जीवन की अनिवार्यता समझती हूँ परन्तु यही कार्य यदि मेरी देवरानी या जिठानी अपने बच्चे के प्रति करती है तो मैं उसकी बुराई करती हूँ और मेरे लिए वह व्यवहार असहनीय हो जाता है। यह दोहरा मापदण्ड क्यों? लाइसेन्स मिलेगा तो सभी को मिलेगा और कैन्सल होगा तो सभी का होगा।

भगवान की सन्तान, हैवान की नहीं

वास्तविकता यह है कि हमें बुराइयों से भरा व्यवहार किसी का भी अच्छा नहीं लगता। हम बुराइयों को पसन्द नहीं करते परन्तु खुद की बुराइयाँ, खुद को दिखती नहीं, खुद को चुभती नहीं इसलिए हम उनकी सिफारिश करते हैं। लेकिन ज़हर तो ज़हर का ही कार्य करेगा। चाहे मेरे कण्ठ में उतरे या दूसरे के। बुराइयाँ तो दुख ही देंगी, तकरार और मनमुटाव ही पैदा करेंगी चाहे मुझ में हों या दूसरे में। अत: ये सर्वत्र त्याज्य हैं, घर-गृहस्थ में भी। क्योंकि घरों में रहने वाले भी भगवान की सन्तान हैं, हैवान की नहीं, जो उन्हें विकारों की छूट मिले। ■■■

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

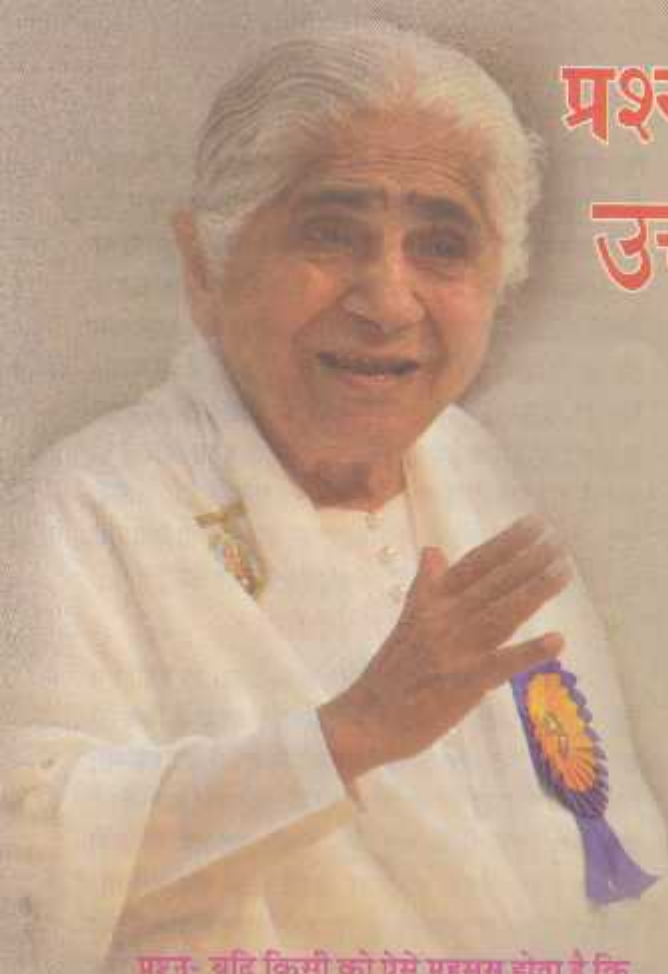

प्रश्न- यदि किसी को ऐसे महसूस होता है कि अभी मुझे बहुत आगे जाना है, तीव्र पुरुषार्थ करना है तो क्या करे?

उत्तर:-संयम, स्वयं, समय के महत्व को पहचान, उसे ध्यान में रख सच्चाई से चलते रहो। जिसके अन्दर सच्चाई है, उसको संयम-नियमों अनुसार चलना अच्छा लगता है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। सच्ची दिल से यह रियलाइज हुआ ना, तो ठीक है पास्ट इज़ पास्ट। पास्ट को तो छोड़ना ही है, पर अभी आधे घण्टे के पहले जो हुआ, उसे भी भूलना है, इसमें बहुत फायदा है। यह सोचो और देखो कि अभी मैं क्या कर सकता हूँ और क्या करना चाहिए? मैंने तो यह पक्का किया है, अब क्या करने का है? बीती को चिंतवो नहीं, आगे की रखो न आश। जो बीती को भूलते नहीं हैं तो फिर वो आगे के लिए भी सोचते रहेंगे कि आगे क्या होगा? यह वेस्ट ऑफ टाइम है। संगम के समय को न स्वयं प्रति गँवाओ, न दूसरों का समय गँवाओ। मन में जो भी संकल्प हैं उन्हें चेक करके जो ज्ञान के संकल्प हैं, उन्हीं का मनन करो, तो फायदा है, बाकी परचिंतन में नुकसान है। मैं करेंगी तो मेरे को नुकसान होगा, मुझे देख और भी करेंगे तो यह वेस्ट ऑफ टाइम। मैं तो ध्यान रखती हूँ कि मेरे कारण किसी का व्यर्थ चिंतन तो नहीं चलता है? यह है गुप्त पुरुषार्थ।

प्रश्नः- गुण और दिव्यगुण में क्या अन्तर है? गुणों को हम दिव्य गुण कैसे बनायें?

उत्तरः- दिव्यगुण तो सतयुग में होंगे। अभी संगम है, पहले बाबा को याद करना है जिससे सर्वगुण सम्पन्न बनना है। बाबा कहते, यह एक अच्छी विधि है, सिर्फ गुणवान बनने के लिए नहीं है पर सबके गुण देखो। हरेक में गुण हैं, अच्छी तरह से देखेंगे तो दिखाई देंगे। कोई आते हैं तो मुस्कराने का ही गुण लो और रीयली प्रैक्टिकल देखा जाए, हरेक में गुण अच्छे हैं। अवगुण दिखाई नहीं पड़ता है। दिखाई पड़ेगा तो वह भी मेरा अवगुण हो जायेगा। दिखाई मेरे को पड़ रहा है, तो उसे देखने के त्याग से ही वैराग्य आयेगा। यह बहुत महीन बात है। गुण ग्रहण करना माना मित्रता भाव। हम एक-दो के साथ, एक ही साथ पढ़ाई में आपस में फ्रैण्ड्स हैं तो बहुत अच्छा लगता है। आपको फीलिंग है, सब मेरे फ्रैण्ड्स हैं? मैंने तो बाबा के साथ सखा रूप में बहुत सुख पाया है। बाबा साकार में जब था तो दृष्टि से बहुत प्यार दिया है, वही प्यार अभी तक चला रहा है।

प्रश्न- बाबा की श्रीमत है कि सिर्फ मीठा नहीं बनना है, मिठास के साथ-साथ न्यारापन भी हो। इसको थोड़ा और स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मिठास में जो बोल-चाल है ना उसमें माया सूक्ष्म रूप से आती है, जो सूक्ष्म खींचती है। वो व्यक्ति, वो

बातें, स्वप्नों में भी आयेंगी फिर उसको ढूँढ़ेंगे, उसके सिवाए ऐसे लगेगा, मेरा कोई नहीं है। जिसका जिसके साथ मोह है, उसको उसकी याद आती है इसलिए बड़ा सम्भालना है अपने को। आपको भी मालूम है, यहाँ भी कइयों को अनुभव है, सेवा करते, साथ रहते किसी के साथ एक्स्ट्रा अटैचमेंट हो जाए तो नाम-रूप में फंसने की बीमारी आ जायेगी। फिर कहेंगे कि आप ही मेरी बात को समझती हो ना और कोई नहीं समझता है, ऐसे आपस में बातें करते हैं। भगवान ने मुझे इससे बचाके रखा है इसलिए मैं भगवान बाबा को बहुत प्यार करती हूँ। कोई के भी नाम-रूप में फंसना या फंसाना यह भी माया का रूप है। यज्ञ की हिस्ट्री में आपने मुझे प्राइवेट बातें करते हुए नहीं देखा होगा। तो मीठा माना ज्ञानयुक्त, योगयुक्त। यह मंजिल ऊंची है पर जाना है जरूर, पहुँचना है, यह दृढ़ता हो अन्दर में। संकल्प की चेकिंग करो, भूल से भी कभी भी फालतू संकल्प न आए क्योंकि यह बड़ी भूल है। अन्दर संकल्प को जितना शान्त रखो उतनी ईश्वरीय शक्ति आती जाती है। यह मेरा प्रेजेन्ट पुरुषार्थ है। संकल्प की शान्ति है तो शक्ति है। अगर मेरे संकल्प कोई बात पर चलते रहते हैं तो वह शान्ति और वह शक्ति कहाँ! तो संकल्प बड़ा अच्छा सच्चाई और प्रेम से भरा हुआ हो।

भले कभी कोई मेरे से कैसी भी बात करे, तो भी मैं साक्षी और शान्त रहती हूँ। ऐसे नहीं, कैसे बात करता है? यह मैं कभी नहीं कहेंगी। सच्चाई के आधार से गंभीरता और धैर्य से उसे उसका रेसपांस मिलता है। वायुमण्डल ऐसा अच्छा हो जो वायब्रेशन सब जगह जाएं। सारे दिन में शान्ति से जो शक्ति जमा होती है, वही फिर शान्ति की शक्ति बन जाती है। यह सबके लिये बहुत जरूरी है चाहे अपने लिये चाहे अन्य के लिये।

प्रश्नः- साक्षी स्थिति और साक्षी दृष्टि में क्या अन्तर है?

उत्तरः- साक्षी स्थिति में रहने से दृष्टि अच्छी हो जाती है। अगर साक्षी नहीं है तो दृष्टि गुणग्राही नहीं होती है। भावना ऐसी हो कि सबके गुण अपने आप खेंच लेवें, जो गुण इसके हैं वो मैं भी ले लूँ। साक्षीद्रष्टा किसके अवगुणों को देखना जानते ही नहीं है। किसी के अवगुण देखते अपने को सम्भालते हैं। इसकी यह बात है तो मैं बचके रहती हूँ, ऐसे कहना भी कमजोरी है। हमको ऐसा बनना है कि जो हमारे संग में रहे उसको मैं बाबा का दिया हुआ दे दूँ। सब सदा खुशनसीब हो माना नसीब में खुशी है। जहाँ भी हैं, खुशी में हैं। ड्रामा में जो बना हुआ है सो होगा परन्तु हमको साक्षी हो करके देखना और पार्ट प्ले करना है। इससे साक्षी दृष्टि बड़ी अच्छी होती है। साक्षी होने से कोई इधर-उधर की बातें नीचे नहीं उतारेंगी क्योंकि बाबा ने हम बच्चों को अपना बना करके, अपने नूर में रख दिया। इसलिये बाबा पत्र में लिखता था, नूरे रत्न। सभी बाबा की नज़रों में ऐसे आ जाओ, यह मेरी भावना है।

प्रश्न- प्रकृतिजीत आत्मा की क्या निशानी है?

उत्तर- इसको यह करने का है, इसको यह करने का है, ऐसा कहते यह अंगुली ऐसे नहीं उठायें। मुझे क्या करने का है? मुझे पहले विकर्माजीत फिर कर्मातीत बनना है। कोई भी गलती हमारे से हो गयी है तो अभी उसका निशान भी न हो। अभी कर्म जो भी हैं वह अकर्म हो जायें। आत्मा और परमात्मा का जो ज्ञान बाबा ने दिया है, उससे हमारी बुद्धि में यह क्लीयर है कि मैं आत्मा हूँ, कैसी हूँ? भृकुटि के बीच में चमकती हुई, अजब सितारे मिसल हूँ।

सदा ही आत्मिक स्थिति में स्थित रह बाबा के साथ कनेक्शन होने से लाइट-माइट आत्मा में आ रही है। अभी सभी याद में बैठे थे, कोई चिंतन नहीं था, यह एक हमारी नेचर बन जाये। पास्ट इज़ पास्ट की नेचुरल नेचर बन जाये। कल क्या करने का है, हो जायेगा, देखा जायेगा। अब क्या करना है, क्वेश्चन नहीं है। जो हो रहा है, सो अच्छा, जो होगा सो अच्छा, यह एक हमारी नेचुरल नेचर हो जाये। मैं आत्मा प्रकृति के शरीर में हूँ। यह प्रकृति (देह) पाँच तत्वों की है, यह घर भी पाँच तत्वों का है। प्रकृतिजीत माना हम प्रकृति के अधीन नहीं हैं पर प्रकृति का आधार जरूर है। प्रकृति के आधार से नेचुरल सब सेवायें हैं। यह आधार निमित्त है। ■■■

पत्र सम्पादक के नाम

नवम्बर, 2018 अंक का हर एक लेख अनुकरणीय है, जिसे भी पढ़ूँ, दोबारा पढ़ने का मन अवश्य करता है। मन में नई ऊर्जा भरती है। 'प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के' यह लेख पुरुषार्थियों के लिए बहुत ही मददगार है। 'आपसी संबंधों में समरसता' लेख पारिवारिक संबंधों के टूटने के कारण को स्पष्ट करता है और कैसे इनमें मधुरता व मजबूती ला सकें, उसके लिए नई रोशनी भी भरता है। इसके अलावा 'क, ख, ग, घ का अर्थ', 'मेरे साथ क्या हो रहा है, इसे छोड़, मुझे क्या करना है, इस पर ध्यान दो' आदि लेख और भाई-बहनों के अनुभव भी हृदयस्पर्शी हैं। कविता ''कैसी यह दीवाली है'' बताती है कि सच्ची दिवाली क्या है और कैसे मनायें, बहुत अच्छी लगी।

ज्ञानामृत लेकर आती है ज्ञान-गुणों की बरखा बहार।
इन दिव्य गुणों से कर लो अपने जीवन का शृंगार।।
ज्ञानामृत का पान कर लो इसमें भरी है अमृत धार।
पुष्प समान खिलेगा आपका जीवन, घर और संसार।।

तिलकराम तेंदुलकर, केन्द्रीय जेल, रायपुर (छ.ग.)

स्मृति-दिवस विशेषांक पढ़ा। सम्पादकीय में बाबा द्वारा दिए गए ज्ञान, सन्देश, वरदान को पढ़कर मुझे एक किस्सा याद आ गया। बात तब की है जब भ्राता हरीश रावत उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री थे और मैं उनके प्रवक्ता के रूप में सेवारत था। एक शाम करीब साढ़े सात बजे मैं अपनी युगल सुनीता के साथ बाजार गया हुआ था, तभी सी.एम.साहब का फोन आया कि किये जा रहे विकास कार्यों का सन्देश जनता तक किस तरह पहुँचाया जाये, क्या इसे खबर रूप में भेजना अच्छा रहेगा? मैंने हाँ बोला तो उन्होंने कुछ पॉइंट्स नोट करा दिए। तब तक पौने आठ बज चुके थे। हम घर लौटने लगे तो युगल ने फोन के बारे में पूछा। मैंने सब बताया और कहा कि अब आठ बजने वाले हैं, बहुत देर हो चुकी है, कल खबर भेज दूँगा। युगल बोली, उन्होंने कुछ सोचकर ही फोन किया होगा इसलिए अभी खबर बनाकर भेजोगे तो अच्छा रहेगा। मैंने युगल की बात मान कर मीडिया में खबर जारी कर दी। अगले दिन लगभग सभी अखबारों में प्रमुखता से वह खबर छपी। सी.एम.साहब बहुत ही खुश हुए। तब मैंने जाना कि समय की कितनी कीमत होती है। ब्रह्मा बाबा बच्चों को समय की अहमियत बताते थे। जो समय की कीमत समझ लेता है वह सफलता प्राप्त कर लेता है। जनवरी अंक के किस-किस लेख और संस्मरण की बात करूँ, बाबा के गुणों का खजाना ज्ञानामृत में पढ़ने का सौभाग्य मिला।

डॉ.श्रीगोपाल नारसन, एडवोकेट, रुड़की (उत्तराखण्ड)

नवम्बर, 2018 की ज्ञानामृत का हर लेख मन को भा गया। सभी लेख ज्ञान को बढ़ाने वाले, मूल्यवान तथा अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर देने वाले हैं। 'कहीं गाड़ी छूट न जाये' यह कविता बहुत ही अच्छी लगी।

ब्रह्माकुमार पवन, बहरामपुर (पश्चिम बंगाल)

'पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा स्मृति-दिवस विशेषांक' ब्रह्मा बाबा को यज्ञ प्रति दृष्टि जानने का एक पूर्ण अंक है। इससे ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी भाई-बहनों की ब्रह्मा बाबा से हुई पालना का सुन्दर परिचय मिला।

संजय की कलम से 'ऐसे मिला मुझे साहित्य लिखने का वरदान' के ये वाक्य आत्मा को छू गये, 'जब बाबा मुझे निमित्त बनायेंगे, तो पहले मुझे ही समझायेंगे। इसका अर्थ है कि पहले मेरा कल्याण होगा। यह तो बहुत बड़ी बात है कि मैं ईश्वरीय ज्ञान को समझ पाऊँगा। मैं इसको बारीकी से नहीं समझूँगा, तो दूसरों को कैसे समझाऊँगा?' इसी लेख के अंत में मम्मा का वर्णन करते हुए उन्होंने जो लिखा, वह किसी के लिए भी अनुकरणीय और संतोषप्रद है, 'मम्मा की यह विशेषता थी कि बाबा ने जो कहा, मम्मा ने सौ प्रतिशत निश्चय करके मान लिया और चलकर दिखाया। वे कभी नहीं भूली कि यह कौन कह रहा है।'

डॉ.सम्राट सुधा, रुड़की (उत्तराखण्ड)

सिद्धि पाने के लिए बुद्धि का सशक्तिकरण करो

■■■ ब्रह्माकुमार विनायक, सोलार प्लान्ट, शान्तिवन (आबू रोड)

बाहुबल, जनबल, धनबल, अस्त्र-शस्त्र का बल इस सब से बुद्धिबल सर्वोत्तम माना जाता है क्योंकि जहाँ बुद्धि बलवान है वहाँ अन्य सर्व प्रकार के बल अपने आप शरणागत हो जाते हैं। बुद्धि अर्थात् निर्णय करने की शक्ति। मनुष्य का भविष्य हर बात में उसके निर्णयों पर ही आधारित होता है। मानव के उत्थान और पतन का आधार है ही बुद्धि क्योंकि जिसकी बुद्धि श्रेष्ठ है वह मानव कुल के अमूल्य रतनों में से एक गिना जाता है और भ्रष्ट बुद्धि वालों का हर कार्य दुराचार से आरंभ होता है तथा पश्चाताप के साथ अंत को पाता है।

बुद्धि की महान भूमिका

राजा सर्वाधिकारी होते हुए भी हर कदम पर राजगुरु की सलाह लेता रहता है और उसी अनुसार ही अपना कदम उठाता है क्योंकि राजगुरु की सलाह में सदा राज्य व प्रजा का हित समाया हुआ होता है। राजा अगर गलत रास्ते पर कदम रखता है तो भी राजगुरु को संपूर्ण अधिकार है, राजा को उसकी गलती की महसूसता कराकर फिर से सही रास्ते पर लाने का। जिस राज्य का राजगुरु दक्ष है वह राज्य सुख, शान्ति, संपत्ति और एकता से भरपूर रहता है। देश के उत्थान का मूल आधार राजगुरु होता है। बुद्धि की भी वही भूमिका है जो राजगुरु की है। आत्मा राजा है तो मन उसका मंत्री है और बुद्धि है राजगुरु।

आत्मा के मन में जो संकल्प उठते हैं, उनका बीज है संस्कार, जो पूर्व कर्मों के अभिलेख हैं। अगर संस्कार आसुरी हैं अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के वश हैं, तो उठने वाले संकल्प भी विकार से लेपित होंगे। अगर ऐसे संकल्पों के वश हम कर्म कर लेते हैं तो वह पाप कर्म होता है जिसकी सजा भोगनी पड़ती है। उठने वाला संकल्प यथार्थ है या नहीं, कर्म में लाने लायक है या नहीं, कर्म में लाने से लाभ और हानि क्या है, इन सब बातों को समझकर निर्णय लेने की मुख्य जिम्मेवारी है बुद्धि की। बुद्धि को ही विवेक भी कहा जाता है।

राजगुरु की उपेक्षा न करो

अगर राजा या मंत्री विषयासक्त, विलासी या कुटिल हों तो वे राजगुरु की सलाह को सुनी-अनसुनी कर देते हैं। वैसे ही जब-जब मन विषयासक्ति के कारण अनुचित मार्ग पर कदम रखता है, तब-तब बुद्धि सावधानी देती है। साथ-साथ इस कर्म के परिणामस्वरूप आने वाली विपत्ति की भी सूचना दे देती है। परन्तु, विकारों की तीव्रता से पीड़ित आत्मा कभी-कभी, अपने राजगुरु बुद्धि की चेतावनी की उपेक्षा कर देती है। जब बार-बार बुद्धि का दमन होता है, उसके उपदेशों की अवहेलना की जाती है तब बुद्धि की निर्णय शक्ति क्षीण होते-होते अंततः निष्क्रिय हो जाती है अर्थात् बुद्धि को ताला लग जाता है। विवेक का निष्क्रिय होना अर्थात् उन्नति का अंत और पतन की आदि। मन में उत्पन्न होने वाले हर संकल्प को कर्म में लाने के पहले बुद्धि के द्वारा फिल्टर कराना, यही कलंक रहित चरित्र की नींव है।

स्वर्ग की स्थापना के कार्य में बुद्धि का योगदान

पूरे कल्प की तुलना में बुद्धि का सबसे अधिक उपयोग संगमयुग में होता है जहाँ स्वयं परमपिता परमात्मा शिव भगवान स्वर्ग या सतयुग की स्थापना करने हेतु इस पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। वे ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग सिखाते हैं जिससे कलियुगी पतित आत्माएँ पावन बनकर सतयुग में जाने के योग्य बन जाती हैं। सहज राजयोग का माध्यम है बुद्धि। जैसे, धनुर्विद्या में धनुष के बिना बाण का प्रयोग करना असंभव है, वैसे ही बुद्धि को कार्य में लगाए बिना राजयोग का अभ्यास करना यथार्थ नहीं कहा जाएगा। मनुष्य को जीवात्मा कहते हैं अर्थात् चैतन्य आत्मा और जड़ शरीर का संयुक्त रूप। जैसे, हाथ, पाँव, नाक आदि शरीर के अंग होते हैं वैसे ही आत्मा की सूक्ष्म शक्तियाँ हैं मन, बुद्धि और संस्कार।

अगर हाथ से हम बिजली की तार छूते हैं तो बिजली

केवल हाथ में ही नहीं वरन् पूरे शरीर में प्रवाहित होगी। वैसे जब बुद्धि रूपी सूक्ष्म फैकल्टी से हम भगवान शिव पिता का स्मर्श अर्थात् याद करते हैं तो उस सर्वशक्तिवान की शक्ति मात्र बुद्धि तक ही नहीं बल्कि मन और संस्कार में भी भर जाती है। जैसे, अग्नि के स्पर्श से सोने में मिश्रित धातु जल जाती है और सोना शुद्ध बन जाता है, वैसे ही, इस योगाग्नि से आत्मा के आसुरी संस्कार भस्म होकर साथ-साथ वरदान के रूप में दैवी संस्कारों की धारणा हो जाती है। इस विधि को सहज राजयोग कहा जाता है। इस विधि से ही आत्मा पतित से पावन बन, आने वाली नई दुनिया या स्वर्ग में जाने की योग्यता प्राप्त कर लेती है। परिवर्तन की इस पूरी प्रक्रिया का यंत्र है बुद्धि।

एक कटु सत्य

कहा जाता है, जब असुरों को वरदान मिलता था तो वे दूसरों को दुख देने के लिए और अल्पकाल के विलासी सुख पाने के लिए उस दैवी शक्ति का प्रयोग करते थे। इससे वे फिर से श्रापित हो जाते थे। वैसे ही बुद्धि भी, भगवान को याद करने के लिए, सृष्टिनाटक में स्वयं की महान भूमिका का दर्शन करने के लिए, शिव भगवान के महावाक्यों का विचार सागर-मंथन कर उनका स्वरूप बनने के लिए, भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में स्थित होने के लिए मिला हुआ एक शक्तिशाली वरदान है। लेकिन, खेद की बात है कि हम कई बार इस वरदान का दुरुपयोग शरीरों को याद करने, परचिंतन करने, अकल्याणकारी निर्णय लेने, दुनियावी मनोरंजन का आनंद लेने, संशय से पीड़ित होकर ज्ञानसागर से अमृत के बजाय विष निकालने के लिए कर लेते हैं अर्थात् बुद्धि को श्रापित कर देते है। यह जैसे कि भस्मासुर बन स्वयं ही स्वयं को जला डालते हैं।

बुद्धि का सशक्तिकरण ही सफलता की चाबी

पतित से पावन बनने के लिए दो बातों का निरंतर पुरुषार्थ करना पड़ता है। पहला है, कर्म करते हुए कर्मेंद्रियों से कोई पाप न हो, दूसरा, जन्म-जन्मांतर से बने पाप भस्म हों। इन दोनों बातों में विजय पाने का साधन है बुद्धि। वह ढाल बनकर विकारों के आक्रमण से हमें बचाती भी है अर्थात् पाप कर्म होने से पहले चेतावनी देती है और तलवार बन एकाग्रता संपन्न याद से, पूर्व पापों को काटती भी है। लेकिन, निरंतर सिद्धि तब मिल सकती है जब बुद्धि लेशमात्र भी चंचल न हो। चंचलता, असफलता की बुनियाद है। अत: चंचलता को समाप्त कर बुद्धि को दक्ष और सक्षम बनाने के लिए उसका सशक्तिकरण करना बहुत ही आवश्यक है।

सशक्तिकरण के दो चरण – परहेज और खुराक

परहेज: जैसे कुछ पदार्थों को खाने से शरीर का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। इसको कहते हैं फूड पाइजनिंग या इनफेक्शन। शरीर के अंदर जाकर वह पदार्थ विषैला बन जाता है। वैसे ही नकारात्मक विचारों को स्वीकार करने से बुद्धि की स्थिरता बिगड़ जाती है। अनैतिक बातें, परचिंतन, ईर्ष्या-द्वेष, वैर-विरोध से लेपित बातें, जिद्द और बदला लेने के संकल्प, व्यर्थ और साधारण विषयों पर सोचने की आदत आदि बुद्धि को संक्रमित कर उसकी सकारात्मकता को नष्ट कर देते हैं। इसलिए इन बातों को दूर से ही पहचान कर, उनके स्पर्श से परहेज रखना, यह सिद्धि स्वरूप बनने का पहला कदम है।

खुराक: प्रतिदिन ईश्वरीय ज्ञान-मुरली ही बुद्धि की खुराक है। यह खुराक ज्ञान-गुण-शक्तियों के सागर शिवपिता से मिलती है। जैसे कानून की पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी को यथार्थ व अयथार्थ हर बात की समझ दी जाती है वैसे ही ईश्वरीय ज्ञान मुरली से सुकर्म, अकर्म और विकर्म का राज़ पढ़ाया जाता है, जिस पर सृष्टिनाटक का खेल रचा हुआ है। इसको श्रीमत कहा जाता है। मुरली अर्थात् शुभ व समर्थ संकल्पों की खान। रोज़ सुबह या शाम ज्ञान मुरली सुनने से, उस पर मनन-चिंतन करने से बुद्धि की विवेक शक्ति जागृत होती जाती है। यथार्थ निर्णय लेने के लिए बुद्धि सशक्त हो जाती है। जैसे-जैसे श्रीमत को हम हर कदम पर प्रयोग में लाने का नियम बना लेते हैं, वैसे-वैसे बुद्धि शक्तिशाली होती जाती है। परिणामस्वरूप, पापकर्म करना समाप्त होता जाता है और पुण्य का खाता वृद्धि को पाता जाता है।

नियमित रूप से राजयोग का अभ्यास

बुद्धि भ्रष्ट होने से पाप कर्म होने लगते हैं। भ्रष्ट होने के दो कारण हैं। एक तो विनाशी शरीर को ही मैं समझना

और ठिक्कर-भित्तर, पेड़-पौधों में भगवान का अस्तित्व ढूंढ़ना। इस से हम स्वयं को भी खो बैठे और भगवान से भी दूर हो गए। राजयोग का नियमित और निरंतर अभ्यास हमें इस भ्रम से मुक्त कर वास्तविकता का दर्शन कराता है कि मैं विनाशी, जड़ शरीर नहीं बल्कि अविनाशी चैतन्य आत्मा हूँ और मेरे पिता स्वयं भगवान शिव हैं। वे इस समय मुझे सर्व पाप व दुखों से मुक्त कर अर्थात् पतित से पावन बनाकर अपने साथ ले जाने के लिए इस धरती पर अवतरित हुए हैं। इस बात की स्पष्ट अनुभूति ही मनमनाभव होने का या सर्व संबंधों का रस एक भगवान से प्राप्त करने का साधन है जिससे मन परमात्म प्यार में लीन हो जाता है। मन की यह लीन अवस्था, बुद्धि को स्थिर और एकाग्र होकर परमात्मा को याद करने में मदद करती है। जितना-जितना बुद्धि रूपी नेत्र एकाग्रता से परमात्मा को निहारता रहेगा, उतना-उतना बुद्धि का सशक्तिकरण होता रहेगा।

विचार सागर मंथन

कहा जाता है, क्षीर सागर मंथन से अमृत मिला जिसको पीकर देवताएं अमर बने। यह वर्तमान समय का गायन है। ज्ञान के सागर शिवपिता से मिले महावाक्यों पर मंथन-चिंतन कर के, उन महावाक्यों में हमारे प्रति छिपी भगवान की आश, उसको आचरण में लाने की विधि, उससे होने वाले लाभ – इन गुह्य बातों का दिल से अहसास करना ही अमृत पीना है। इससे मिलने वाली शक्ति से मन और बुद्धि अमर अर्थात् दिव्य बन जाते हैं।

अंतर्मुखता और एकांत

ऊपर बताई गई सारी बातें आसान तब लगती हैं जब हम अंतर्मुखी और एकांतवासी बनेंगे। बुद्धि की शक्ति ह्रास होने का कारण है बाह्यमुखता और चंचलता। अंतर्मुखता अर्थात् एक ही सकारात्मक चिंतन में खो जाना। साधू-संत भी तपस्या करने गुफा में जाकर बैठते थे ताकि बाह्य वृत्तांतों का असर न हो। वैसे ही अंतर्मुखता भी एक गुफा है जिसको धारण करने से सब कुछ देखते हुए, सुनते हुए, संबंध-संपर्क में आते हुए भी मन-बुद्धि उन चीजों के प्रभाव में नहीं आते हैं। एकांत अर्थात् इस सृष्टिनाटक में आदि से अंत तक स्वयं को मिली हुई भूमिका का दर्शन करना। स्वयं की विशेषता को जानकर उसको सफल करना, कमी-कमजोरियों को समझ उनको मिटाना, तमोप्रधान अवस्था से सतोप्रधान बनने के लिए मन ही मन अपने आप से बातें करना और श्वासों-श्वास पुरुषार्थ करते रहना। इस विधि को स्वदर्शन-चक्र फिराना कहते हैं। इससे परचिंतन और परदर्शन संपूर्ण समाप्त हो जाएगा। हजारों लोगों के बीच रहते हुए भी स्वयं को एकांतवासी अनुभव कर सकते हैं। इन दोनों प्रकार के अभ्यास से बुद्धि विकारी एवं व्यर्थ के संक्रमण से मुक्त रहेगी।

शक्तिशाली बुद्धि के लक्षण

अल्पकाल की इच्छाओं और आकर्षण से परे रहना, व्यक्ति और परिस्थिति को परख कर यथार्थ निर्णय लेना, जहाँ चाहें, जिस स्वरूप में चाहें, जितना समय चाहें एकाग्र हो जाना, इन तीन बातों में वह सक्षम रहती है।

सिद्धि के लिए साधन के सशक्तिकरण की आवश्यकता

बढ़ई लकड़ी काटने के पहले अपने साधन अर्थात् औजारों को धार लगाता है ताकि कृति सुंदर बने। संगीतकार प्रदर्शन के पहले सितार, तबला आदि के कसाव को ठीक करता है। लम्बी यात्रा शुरू करने के पहले चालक अपने वाहन की मरम्मत कराता है ताकि सुरक्षित और समय के पहले मंजिल पर पहुंचे। आध्यात्मिक साधना का साधन है बुद्धि। इस साधना में सिद्धि प्राप्त करनी है तो बुद्धि की मरम्मत या सशक्तिकरण करना अनिवार्य है। अगर हम बुद्धि में बल नहीं भरते हैं तो आसुरी संस्कार उसको अपने वश में लेकर भ्रष्ट बना देगा। परिणाम है साधना में असफलता।

दिव्य बुद्धि, जो इस संगमयुग पर परमपिता परमात्मा की देन है, वह पूरे सृष्टिनाटक में सब से अनोखा उपहार है। पूरे कल्प हमें मालामाल बनाने का आधार है। परमात्मा से सर्व संबंध जोड़ने का एकमात्र साधन है बुद्धि। अतः हम इस अमूल्य साधन को दूषित होने से बचाएंगे, ज्ञान-योग के प्रयोग से सशक्त बनाएंगे तो पुरुषार्थ में सिद्धि निश्चित है। ■■■

नया जन्म

■■■ स्त्री रोग विशेषज्ञ ब्र.कु.डॉ.कुमकुम महरोत्रा, मुरादाबाद (उ.प्र.)

मेरी रुचि टी.वी.धारावाहिक अथवा मूवी में कभी नहीं रही। मार्च, 2016 की एक शुभ घड़ी में मैं रिमोट से टी.वी.चैनल बदलती जा रही थी और खोज रही थी कि मुझे कुछ कल्याणकारी देखने को मिल जाये। अचानक पीस ऑफ माइण्ड चैनल पर अँगुली रुकी और उस समय शिवानी बहन को बोलते हुए सुनकर ऐसा लगा कि यही मेरी राह है। मैं प्रतिदिन उसी समय टी.वी.देखने लगी। धीरे-धीरे पी.एम.टी.वी. के माध्यम से पता चला कि शिवानी बहन का प्रोग्राम दिनभर में चार बार प्रसारित होता है। मैं चारों समय उनका प्रोग्राम देखने लगी। उसी से मैंने जाना कि मेडिटेशन के क्या मायने हैं। टी.वी.से ही वेबसाइट एड्रेस लेकर मैंने अपने शहर के ब्रह्माकुमारी आश्रम का पता लगाया, फोन द्वारा राजयोग कोर्स करने की इच्छा व्यक्त की और 20 जून से 27 जून, 2016 तक राजयोग का विधिवत् कोर्स किया।

धीरे-धीरे रुचि बढ़ती गई और मैं रोज मुरली सुनने जाने लगी। डॉक्टरी पेशे में होने के कारण कभी किसी मरीज की वजह से यदि समय न मिलता तो मुरली मिस भी हो जाती। मैंने माउण्ट आबू में, 16 सितम्बर, 2016 को मेल द्वारा पूछा कि क्या 25 दिसम्बर, 2016 के आसपास शिवानी बहन का कोई प्रोग्राम ओ.आर.सी.में है? उन दिनों में मुझे गुरुग्राम जाना था। मेल का जवाब तो नहीं आया पर जब पी.एम.टी.वी.पर देखा "शिवानी बहन का ओ.आर.सी.कार्यक्रम गायनाकोलोजिस्ट के लिए" और तारीख देखी, 24-25 दिसम्बर, 2016, तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इस कार्यक्रम का मैंने भरपूर लाभ उठाया।

धीरे-धीरे मैंने बाबा से बातें करनी सीखी। योग लगने में भी धीरे-धीरे सुधार होता गया। ज्ञान-योग-धारणा-सेवा का पाठ पक्का होते-होते निश्चय पक्का हो गया। अब पिछले ढाई साल में ही ऐसा लगने लगा है कि जैसेकि मैं बाबा की बहुत पुरानी बच्ची हूँ। मन की शान्ति और सन्तुष्टता को पाकर बिल्कुल नया जन्म होने जैसा प्रतीत हो रहा है।

एक बार मैं कुछ परेशान-सी होकर बाबा से बोली, तो बाबा ने जवाब दिया, तू तो मेरी बहुत प्यारी बच्ची है, तू ऐसा क्यों सोचती है? इससे मुझे मेरी परेशानी तो भूल गई और बाबा की कही हुई यह बात पक्की हो गई। पहली बार जब मैं माउण्ट आबू की यात्रा अकेले कर रही थी तो रास्ते में मुझे अकेलेपन का अनुभव हुआ। तभी बाबा की एक किरण मानो मुझसे बोली, मैं तो तेरे साथ हूँ। उसी यात्रा में एक सहयोगी ने मुझे बातों-बातों में ईश्वरीय कार्य के खिलाफ करने की कोशिश की। मैंने बाबा से कहा, बाबा, मेरा मन कुछ अजीब-सा हो रहा है, तब बाबा ने कहा, बच्ची, यह तेरी परीक्षा थी।

एक बार स्टॉफ नर्स की कमी के कारण अपने अस्पताल में मैं एक ऑपरेशन केस लेने में हिचकिचा रही थी कि बिना नर्स के ऑपरेशन कैसे कर पाऊँगी। जहाँ चार हाथ चाहिएँ, वहाँ दो हाथों से ये सब कैसे होगा? तब भी बाबा बोले, तुम तो बस हाथ चलाना, ऑपरेशन तो मैं करूँगा।

पिछले वर्ष माउण्ट आबू में डॉक्टर्स कान्फ्रेंस में जाकर मेरा मन बना कि अपने शहर में भी ऐसी ही कान्फ्रेंस की जाये। यह कार्य भी बाबा ने अपने हाथ में ले लिया है। दिनोंदिन इतने अलौकिक अनुभव होते जा रहे हैं कि बाबा के लिए हर समय 'वाह बाबा, वाह' ही निकलता है। शुक्रिया तो बहुत छोटा शब्द है। अपने भाग्य को जितना सराहूँ, उतना ही कम है। ■■■

प्रभु-पालना के चमत्कार

■■■ ब्रह्माकुमारी दीपा, मालवीय नगर, दिल्ली

बात उन दिनों की है जब मेरे जीवन में विकृतियों ने उथल-पुथल मचा रखी थी। मुझे भलीभाँति याद है, सन् 2009 का वर्ष था। जीवन में तनाव, चिन्ता, दु:ख के सिवाय कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था जबकि पारिवारिक जीवन ठीक-ठाक था। फिर भी अन्दर-ही-अन्दर एक अजीब-सी बेचैनी, असन्तुष्टता की भावना थी। पता नहीं मुझे किस चीज की तलाश थी, समझ नहीं आ रहा था? जिन्दगी में इतना क्यों भटकाव था? एक सवाल मुझे बेचैन किये हुए था कि जीवन का मकसद क्या है? अच्छा पति, घर-परिवार, बच्चे इन्हीं में उलझ कर जिन्दगी बितानी है या कुछ और भी करना है? कुछ समाजसेवी संस्थाओं के साथ जुड़ कर तथा कुछ व्यक्तिगत स्तर पर भी समाजसेवा के कार्य किये। शुरू-शुरू में तो सबकुछ अच्छा लगता, फिर अचानक से भटकाव चालू हो जाता, जिसके कारण मन में अशान्ति और खालीपन महसूस होने लगता।

तार्किक, सशक्त और व्यवहारिक ज्ञान

फिर एक दिन टी.वी. चैनल टटोलते-टटोलते रिमोट ठहर गया आस्था चैनल पर, जिस पर अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़ प्रोग्राम का प्रसारण हो रहा था। शिवानी बहन के तार्किक, सशक्त तथा व्यवहारिक ज्ञान को सुनकर पूरे शरीर में एक अजीब-सी सिरहन के साथ उत्सुकता भर गई। फिर प्रतिदिन इस प्रोग्राम की प्रतीक्षा रहने लगी। प्रोग्राम से प्रभावित हो मैंने भी नजदीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र में जाने का मन बनाया और फिर मालवीय नगर (दिल्ली) सेवाकेन्द्र पर पहुँच गई। वहाँ मेरा परिचय ब्रह्माकुमारी बहनों से हुआ। मैंने राजयोग का कोर्स भी किया किन्तु मेरे जहन में उठे कई प्रश्नों के उत्तर अभी भी अप्राप्त थे।

स्व-परिवर्तन का प्रयोग रहा सफल

शिवानी बहन के अतिरिक्त भी मैं कई प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक वीडियो देखती। अन्य वक्ताओं को भी सुनती रहती किन्तु बाबा की पालना में पली हुई शिवानी बहन का दिया हुआ ज्ञान मुझे सहज और व्यवहारिक लगा। परिणामस्वरूप मैंने स्व-परिवर्तन का प्रयोग आरम्भ कर दिया। धीरे-धीरे मेरे जीवन में पुन: उमंग-उत्साह का रंग भरने लगा। इसके साथ-साथ शान्ति और संतुष्टि की अनुभूति भी होने लगी।

भटकाव बदल गया शान्ति में

सन् 2011 का वर्ष था, मुझे रोज अमृतवेले कोई जगाने आता था और महसूस होता था कि जैसे कोई कह रहा हो – उठ जाओ बच्चे। मुझे बाद में ज्ञात हुआ कि ब्रह्मा बाबा रोज अपनी दृष्टि दे मुझे जगाते थे। यह बहुत बड़ा चमत्कार था। मैं कड़ाके की सर्दी की चिन्ता किये बगैर बाहर बगीचे में चली जाती और योग का अभ्यास करती। योग कैसे किया जाये, इसका अधिक ज्ञान मुझे नहीं था किन्तु अमृतवेले उठना, शिवबाबा के ध्यान में बैठना नियमित हो गया था। नतीजा यह रहा कि मुझे विस्मयकारी अनुभव होने लगे जिन्हें आप चमत्कार भी कह सकते हैं। मैं अपने आपको अन्दर-ही-अन्दर अति आनन्दित और उत्साहित महसूस करने लगी, जैसे कि मुझे जीवन का लक्ष्य मिल गया हो। अब भटकाव की जगह शान्ति ने ले ली थी। मुझे मेरा परिचय मिल चुका था और अपने कई प्रश्नों के उत्तर भी मिलने लगे थे।

दिव्य गीतों से भी मिली प्रेरणा

सन् 2014 आया, मुझे ज्ञात हुआ कि मुझे ब्रैस्ट कैंसर हुआ है। मैंने सहजता से इसे स्वीकारा क्योंकि अब मैं अकेली नहीं थी। मेरे मन ने ज्ञानामृत को चख लिया था

इस कारण मानसिक स्थिति शान्तिपूर्ण और अविचलित थी। अब बाबा के गीत सुनकर समय बीतने लगा। विशेषकर ''ये मत कहो खुदा से मेरी मुश्किलें बड़ी हैं'' और ''ईश्वर अपने साथ है, डरने की क्या बात है'' ये दोनों गीत मुझे बहुत प्रेरणा देते। प्राय: मुझे यह दृश्य दिखाई देता कि कैंसर के इलाज के दौरान मैं बाबा की पवित्र किरणों के नीचे बैठी हूँ और विषैले पदार्थ मेरे शरीर से बाहर निकलते जा रहे हैं। परमात्मा पिता की पवित्र-शक्तिशाली किरणों से मेरा मस्तकाभिषेक हो रहा है। इसी दौरान सेवाकेन्द्र से कई भाई-बहनें भी मुझसे मिलने मेरे घर आये। मेरे लिए यह भी बड़ा सुखद अनुभव था।

मैं पदमापदम भाग्यशाली आत्मा हूँ

समय बीतता गया। बाबा की कृपा से धीरे-धीरे मैं स्वस्थ होने लगी। फिर एक चमत्कारी दृश्य मुझे दिखाई दिया। मेरे घर श्वेत वस्त्राधारी कई आकृतियाँ प्रवेश कर रही हैं। मैं अभी इसे समझने का प्रयास ही कर रही थी कि सेवाकेन्द्र से एक बहन का फोन आया। बाबा ने मुझे निमित्त बनाया एक गीता-पाठशाला खोलने का। इस गीता पाठशाला द्वारा लगभग 27 लोगों ने राजयोग कोर्स किया। फिर मुरली कक्षा का प्रारम्भ हुआ। कई विघ्न और अड़चनें आईं किन्तु दृढ़ निश्चय, सिर पर बाबा का वरदानी हाथ और मस्तक पर विजय का टीका, इस वरदान ने रास्ता आसान बना दिया।

मैं पदमापदम भाग्यशाली आत्मा हूँ। प्रभु पालना में पलते हुए तथा सेवाकेन्द्र की बहनों के मार्ग-दर्शन में मैं आत्मा अन्य लोगों को बाबा के ज्ञान का परिचय दे, उनको अतीन्द्रिय प्रेम, शान्ति और आनन्द की अनुभूति कराने में सहयोगी बनी हुई हूँ। ■■■

बाबा अब तू ही संसार है

ब्रह्माकुमारी मीनाक्षी, दापोली (महाराष्ट्र)

मीठे बाबा, प्यारे बाबा, अब तू ही संसार है।
तू मिले तो है जीत, ना मिले तो हार है।।

कितने जन्मों की आस थी,
सन्मुख मिलने की प्यास थी,
दुख भरे दिन थे मेरे और रातें उदास थी,
तोड़ दिये बंधन सारे, अब तू ही आधार है।
तू मिले तो है जीत, ना मिले तो हार है।।

जग की रीत मैं ना जानूँ,
मन की आँखों से ढूँढती हूँ,
अब ना आये याद कोई, तेरी यादों में झूमती हूँ
तू ही तू नजर आये, बाबा क्या यही प्यार है।
तू मिले तो है जीत, ना मिले तो हार है।।

चलते-फिरते संग-संग रहते,
संग-संग खाते और बहलाते,
अपने रंग का रंग लगाकर कितना हमें ऊँचा उठाते,
एक का पदमगुणा देना, कैसा यह व्यापार है?
तू मिले तो है जीत, ना मिले तो हार है।।

तेरे याद की लगन लगी ऐसी,
एक शमा-परवाने जैसी,
एक ना नहीं है यहाँ जरा भी, रूहों की दुनिया है वैसी,
लेने आया है खिवैया, अब तो नैया पार है।
तू मिले तो है जीत, ना मिले तो हार है।।

साजन और सजनी का मेला,
संगम प्रभु मिलन की वेला,
छूट गई पुरानी दुनिया, ज्ञानरूपी रत्नों से खेला,
पाना था सो पा लिया, बाकी सब बेकार है।
तू मिले तो है जीत, ना मिले तो हार है।।

सच्चे पिता ने दी जीवन जीने की वजह

■■■ ब्रह्माकुमारी हरवीन कौर, सिरसा (शान्ति सरोवर), हरियाणा

बात सन् 1994 की है, मेरी शादी एक सम्पन्न और संयुक्त परिवार में हुई जहाँ परिवार के लगभग 10 सदस्य बड़ी खुशी से अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। मैं भी अपने ससुराल में बहुत खुश थी। मुझे अपने पति और अन्य सभी सदस्यों से बहुत सम्मान और प्यार मिलता था।

अचानक दु:खों का पहाड़ गिरा

सन् 2003 में एक दिन मैं, मेरे पति और मेरी सास, मेरी जेठानी का मोहाली (पंजाब) के फोर्टिस हॉस्पिटल से दिल का ऑपरेशन करवा कर सिरसा लौट रहे थे। मेरी गोद में मेरा पौने दो साल का बेटा भी था। अचानक हमारी गाड़ी एक ट्रक से टकरा कर दुर्घटनाग्रस्त हो गई और मेरी सास और जेठानी की मौके पर ही मौत हो गई। मुझे और मेरे पति को भी गम्भीर चोटें आईं और हम दोनों बेहोश हो गए। परिवार वालों को खबर मिलने पर हमें मोहाली के फोर्टिस हॉस्पिटल में दाखिल कराया गया। प्रभु की कृपा से मेरा बेटा ठीक था। हॉस्पिटल पहुँचने पर मेरे पति को नीचे वाले फ्लोर पर आई.सी.यू. में और मुझे ऊपर वाले फ्लोर पर रखा गया। मेरा कूल्हे का ऑपरेशन हुआ और भी अन्य गम्भीर चोटों का इलाज चलता रहा। कुछ दिनों बाद मेरे पति ने भी शरीर छोड़ दिया। मेरी शारीरिक हालत को देखते हुए, डॉक्टर के मना करने पर मेरे परिवार वालों ने पति की मौत की खबर मुझे नहीं बताई और मेरे पूछने पर यही कहा जाता रहा कि वो ठीक हैं और नीचे वाले फ्लोर पर दाखिल हैं, जब तुम्हें हॉस्पिटल से छुट्टी मिलेगी तो जाते वक्त नीचे मिल लेना।

पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई

कुछ दिनों बाद जब मुझे हॉस्पिटल से घर लाया गया तो भी सभी मुझसे यही झूठ कहते रहे कि तुम्हारे पति की हालत गम्भीर हो जाने के कारण उसे किसी दूसरे शहर के बड़े हॉस्पिटल में शिफ्ट किया गया है। जब तुम्हारी हालत ठीक हो जाएगी तो तुम्हें वहाँ ले चलेंगे क्योंकि मुझे भी बहुत चोटें आई थीं और शरीर में कई जगह टांके लगे हुए थे, इस कारण मेरी हालत को देखते हुए कोई मुझे सच बताने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। मुझे परिवार वालों की बातों पर यकीन नहीं हो रहा था। फिर मेरे बहुत पूछने पर मुझे सच बता दिया गया कि तुम्हारे पति अब इस दुनिया में नहीं हैं। बस फिर क्या था, मेरे पैरों तले से जमीन खिसक गई। आँखों के सामने अन्धेरा-सा छा गया। ये दु:ख का पहाड़ उठाना मेरे लिए सम्भव नहीं था और मैंने यह फैसला कर लिया कि जिस दिन बिस्तर से उठूँगी तो अपनी सात वर्ष की बेटी और पौने दो साल के बेटे को जहर दे दूँगी और फिर खुदकुशी कर लूँगी। पति के बिना जीवन मेरे लिए किसी सज़ा से कम नहीं था।

बेड पर ही ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा मिला ईश्वरीय ज्ञान

कूल्हे के ऑपरेशन के कारण मैं अभी बेड पर ही थी, चल नहीं सकती थी। सिरसा में मेरे लौकिक चाचा जी की बेटी ब्रह्माकुमारीज़ संस्था से जुड़ी हुई हैं और नियमित क्लास में जाती हैं। उसके साथ मेरा अति स्नेह होने के कारण उसने मेरे दिल की बात जान ली थी। मेरे ससुराल वालों से आज्ञा लेकर वो ब्रह्माकुमारी बहनों को हमारे घर पर लेकर आई और मुझे ज्ञान का साप्ताहिक कोर्स कराया। घर में तीन मौतें एक साथ हुई थीं, तो घर में बहुत मातम का वातावरण था लेकिन बहनों के घर पर आते ही जैसे रोशनी की कोई नई किरण आ गई। ज्ञान-चर्चा का सिलसिला शुरू हो गया और आत्मा-परमात्मा, सृष्टि-चक्र का ज्ञान श्रवण करते-करते कब मैं परमात्म गोद और उनके असीम प्यार का अनुभव करने लगी, मुझे पता ही नहीं चला। कुछ ही समय में मैं ईश्वरीय ज्ञान के रंग में रंगने लगी और अपने दु:खों के साथ लड़ने की एक अद्भुत शक्ति अपने भीतर महसूस करने लगी। प्यारे बाबा (परमात्मा पिता) से मुझे यह आवाज़-सी अनुभव होने लगी कि बच्ची, तुम्हारा जीवन

सिर्फ तुम्हारा नहीं है। इस जीवन को तुम्हें अब बेहद में आकर परमात्म कार्य में सफल करना है। ऐसे कई अनुभव होने लगे। आत्मघात का विचार समाप्त हो गया और मुझे जीने की जैसे एक वजह मिल गई।

दु:खों का दरिया पार करना अभी बाकी था

मेरे सास, ससुर, जेठानी और पति की मौत हो चुकी थी। घर में अब कोई बड़ा नहीं था। मेरे जेठ अपने दो बच्चों के साथ अपने को असहाय महसूस करने लगे और मैं अपने दोनों बच्चों के साथ जीवन बिताने लगी। संयुक्त परिवार होने के कारण बिरादरी के फैसले के अनुसार मेरी शादी मेरे जेठ से कर दी गई ताकि परिवार को बांधा जा सके। मेरे पति की बहन (मेरी ननद) भी अपने तीन बच्चों के साथ हमारे साथ ही रहती थी। कुछ समय बाद उनको पीलिया हो गया और उन्होंने भी शरीर छोड़ दिया। थोड़ा समय बीतने के बाद अपने नए जीवन साथी के साथ, माता-पिता का फर्ज निभाते हुए हमने ननद के बेटे की शादी कर दी लेकिन शादी के कुछ महीनों के बाद ही वह भी दुर्घटनाग्रस्त हो गया और दो साल कोमा में रहने के बाद उसकी भी मृत्यु हो गई।

परिवार वालों का विरोध भी सहयोग में परिवर्तन हो गया

जीवन की कठिनाइयों के साथ संघर्ष करते हुए मेरे कदम ईश्वरीय मार्ग पर बढ़ते जा रहे थे परमात्मा पिता की गोद, उनके अटूट प्यार तथा निमित्त बहनों द्वारा मिल रही हिम्मत से मैं स्वयं को शक्तिशाली अनुभव कर रही थी लेकिन दूसरी तरफ मेरे मायके और ससुराल – दोनों परिवारों की तरफ से विरोध शुरू हो गया। मेरा आश्रम जाना, मुरली सुनना और ईश्वरीय सेवाओं में अपना समय लगाना किसी को पसन्द नहीं था। पर प्रभु प्रेम की प्यासी मैं आत्मा किसी-न-किसी बहाने से बाबा के घर पहुँच ही जाती थी और बाबा से अपने मन की बात करके स्वयं को हल्का अनुभव करती थी। ईश्वरीय ज्ञान मुरली सुनते-सुनते मैं बाबा की शिक्षाओं का स्वरूप बनने लगी और अपने परिवार वालों को पवित्र वायब्रेशन देने लगी। बाबा के सामने बैठ मन ही मन, विरोध करने वाले सभी परिजनों के लिए दुआएं मांगने लगी। उनके लिए मेरे मन की भावनाएं परिवर्तन होने लगीं। बस, फिर क्या था, देखते ही देखते सभी विरोधी, सहयोगी बन गए। विशेषकर मेरे युगल बहनों के नि:स्वार्थ प्यार को अनुभव करने लगे और मेरे साथ ईश्वरीय सेवाओं में सहयोगी बन गए। अब उनके सहयोग से मैं आत्मा भी दिन प्रतिदिन अपने पुरुषार्थी जीवन में उन्नति महसूस कर रही हूँ।

गुरबाणी में जो पढ़ा था, अब साक्षात् अनुभव होता है

हमारा सिक्ख परिवार होने के कारण, घर पर पाठ-पूजा एवं सत्संग इत्यादि होते ही रहते थे। ईश्वरीय ज्ञान को अनुभव करने के बाद, जो कुछ भी पहले गुरबाणी में पढ़ा था कि हमारे एक कदम चलने पर हमारा पिता परमात्मा हमारे लिए हजार कदम चल कर आता है, वो बात आज मैं अपने जीवन में साक्षात् अनुभव कर रही हूँ। मुझे लगता है कि मैंने तो एक कदम भी नहीं चला था, बस उसे अपना सच्चा पिता माना ही था कि उसने मेरे लिए सुखों और खुशियों के भण्डार खोल दिए। मेरे आँसू पोंछ कर मुझे हर पल हँसना सिखा दिया। मैं अपने युगल और 15 सदस्यों के परिवार के साथ पवित्र और खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही हूँ।

ज्ञान में आने से पहले हमारे घर में तामसिक भोजन चलता था और घर के कुछ सदस्य प्रतिदिन शराब भी पीते थे। लेकिन जैसे-जैसे मेरी लगन और पुरुषार्थ ज्ञान के प्रति बढ़ते गये, सारे घर का वातावरण बदल गया। आज उसी घर में मीट-शराब तो क्या, खाना भी बिना प्याज के पकता है। रोजाना शिवबाबा को भोग भी लगता है और 15 सदस्यों का भोजन एक ही चूल्हे पर पकता है। सभी बड़े प्यार से परमात्मा की याद में वही भोजन स्वीकार करते हैं। सभी परिवार वाले आश्रम में होने वाली सेवाओं में समय प्रति समय अपना सहयोग देते रहते हैं और बाबा और बहनों के सानिध्य में पवित्र प्यार का अनुभव करते हैं। मेरा दिल प्यारे बाबा के प्रेम में हर पल बस यही गाता रहता है –

एक तू जो मिला सारी दुनिया मिली,
खिला जो मेरा दिल सारी बगिया खिली। ■■■

सच्ची सुन्दरता

ब्रह्माकुमारी पूजा, नडियाद (गुजरात)

दुनिया में हर इंसान चाहता है कि वह सुन्दर दिखे। सजना-सँवरना किसे पसंद नहीं! फैशन की इस अंधी दौड़ में हर-एक अपने को आकर्षण का केन्द्र बनाना चाहता है। लोगों के बीच में जाये तो अपनी खूबसूरती की महिमा सुनना चाहता है। इसके लिए न जाने कितने जतन करता रहता है। आज का मानव सौन्दर्य प्रसाधनों पर जितना खर्च करता है, शायद ही अन्य किसी वस्तु पर करता हो। लेकिन सुन्दरता की वास्तविकता को तो वह जानता तक नहीं है। तभी तो अपना बहुमूल्य समय, शक्ति और धन इस दैहिक सुन्दरता पर लुटा रहा है।

एक तरफ लोग कहते हैं कि मानव देह नश्वर है, जो ढलते हुए सूर्य के समान एक दिन ढल जायेगी और दूसरी तरफ शारीरिक सुन्दरता को लेकर प्रतिस्पर्धा लगी हुई है। कितने ही लोगों की चिंता, भय, ईर्ष्या आदि का कारण उनका शारीरिक रूप से सुन्दर न होना है। इसके लिए कभी भगवान को दोष देते हैं तो कभी अपने भाग्य को। खुद को जो हैं, जैसे हैं, वैसे स्वीकार नहीं कर पाते हैं।

शारीरिक रूप से सुन्दर दिखना बुरी बात नहीं है लेकिन महत्व उसका तब है जब साथ में आन्तरिक सुन्दरता भी हो, व्यवहारिक सुन्दरता भी हो, आत्मिक सुन्दरता भी हो। बिना आन्तरिक सुन्दरता के बाहरी सुन्दरता वैसे ही है जैसे विष से भरे हुए घड़े के मुख पर अमृत लगा हो। मानलो किसी की आँखें बहुत सुन्दर हैं लेकिन देखने का भाव विकारी है तो कहा जाता है कि इसकी तो नज़र ठीक नहीं है। अब सोचिये, उसकी आँखें बिल्कुल ठीक हैं फिर भी क्यों कहा गया कि इसकी नज़र ठीक नहीं है। कारण यही है कि बाहरी नज़र से भी ज़्यादा महत्व अन्दर के भाव का है, देखने की वृत्ति का है।

बिना शुद्ध भाव के, केवल क्रीम-पाउडर की सुन्दरता मनुष्य में अभिमान को जन्म देती है और दूसरों की विकारी नज़र को आकर्षित करती है इसलिए इसको सच्ची सुन्दरता नहीं कहेंगे। सच्ची सुन्दरता तो सुख देने वाली होती है, शाश्वत होती है, देखने वाले के मन में अच्छे विचारों को जन्म देने के फलस्वरूप आत्मिक-स्नेह को जन्म देती है। आत्मिक सुन्दरता ही चिरस्थाई होती है।

मानव अगर अपना थोड़ा भी ध्यान आत्मा की तरफ लगाये तो इस आत्म-स्मृति से उसमें नम्रता, धैर्य, मधुरता, सहनशीलता, सरलता, शान्ति आदि दैवीगुणों का उद्भव हो जाता है। इन गुणों के शृंगार से वह देव बन जाता है। देवताओं की नेचुरल सुन्दरता रहती है। उन्होंने आत्मिक सुन्दरता से ही शारीरिक सुन्दरता को प्राप्त किया है। जब हम किसी देवी या देवता की तस्वीर को देखते हैं तो श्रद्धा से नत-मस्तक हो जाते हैं क्योंकि उनकी आत्मा एवं शरीर दोनों सुन्दर हैं। इसलिए दोनों की पूजा की जाती है। आत्मा सतोप्रधान होने के कारण उन्हें सतोप्रधान शरीर योगबल से प्राप्त होता है। इसलिए उनकी महिमा में गाते हैं – सर्वगुण सम्पन्न और सम्पूर्ण निर्विकारी।

छोटा बच्चा निर्विकारी होता है इसलिए सबको अच्छा लगता है। भले ही उसका रंग-रूप, नैन-नक्श कैसे भी हों, फिर भी सब उससे स्नेह करते हैं। अगर हमारा स्नेह सच्चा हो तो उसके बदले में प्राप्त होने वाला स्नेह भी सच्चा होता है। कलियुगी शरीर सबका पुराना हो चुका है। ऐसे में हम विनाशी शरीर को न देख, आत्मा को देखें जो अजर-अमर-अविनाशी है। जैसे साँप के मस्तक में एक मणि होती है, जो नज़र उस मणि को देखती है, उस पर साँप के विष का प्रभाव नहीं होता है, ऐसे ही मनुष्य भी जब मस्तक के बीच चमकती हुई आत्मा मणि को देखता है तो मन मे विकृत भावनाएँ जन्म नहीं लेती हैं।

जैसे आत्मा सुन्दर है, वैसे ही आत्मा का पिता परमपिता परमात्मा भी परम सुन्दर है, अविनाशी है, सदा परम पवित्र और परम पूज्य है। समय की मांग है कि हम नज़र को ऐसा बनायें जो यह आत्मा को देखे और परमात्मा शिव को देखे। कहा गया है,

जैसा देखोगे, वैसा सोचोगे।
जैसा सोचोगे, वैसा बन जाओगे। ■■■

हर दर्द की दवा मुसकान

■■■ ब्रह्माकुमार शुभ्र, दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)

बहुत ही सुंदर एक कहावत है कि जीने के लिए मनुष्य का खाना एक गुणा, पीना दो गुणा, शारीरिक श्रम तीन गुणा एवं मुसकराना चार गुणा होना चाहिए। लेकिन आज के मनुष्य की जीवन प्रणाली इसके सर्वथा विपरीत है। जिस मुसकान के लिए इन्सान सब कुछ कर रहा है वही मुसकान उससे कोसों दूर होती जा रही है।

सृष्टि रंगमंच पर हम मनुष्य ही एकमात्र सौभाग्यशाली प्राणी हैं जिन्हें परमात्मा ने सौगात के रूप में मुखमंडल पर मुसकान दी है। आइए, हम जानें कि यह मुसकान गायब होने का कारण क्या है तथा उसे पुनः मुख पर लाने का उपाय क्या है?

जीवन में रोना किसी को सिखाया नहीं जाता, वह तो अपने आप आ जाता है। किसी ने दुःखदाई कुछ कहा, मनमुटाव हुआ, कोई बात बिगड़ गई, किसी के प्रति ईर्ष्या अथवा द्वेष के कारण तनाव उत्पन्न हुआ और हमारी हंसी चली जाती है। हम गम के सागर में डूब जाते हैं। इसलिए आज की दुनिया में कुछ और देखने को मिले या न मिले, उदास व्यक्ति के दर्शन जरूर हो जाते हैं। जो हमेशा ही उदास रहता है, तनाव में रहता है, उसके साथ बात करना भी कोई पसंद नहीं करता है। कई ऐसे इंसान भी हैं जो अपने मन में बहुत प्रकार की तकलीफें, द्वंद्व, नकारात्मकता आदि लेकर चलते हैं और अपनी मायूसी छिपाने के लिए बनावटी हंसी हंसते हैं। मनोविज्ञान के अनुसार 90% बीमारियों का मूल कारण है तनाव और न मुसकराना। इससे हमारी कई आंतरिक शक्तियां नष्ट हो जाती हैं। एक छोटा बच्चा दिन में 80 से 100 बार हंसता है, वही इंसान बड़ा होकर हंसने के लिए लाफिंग क्लब जाता है या टी.वी. पर बहुत प्रकार के लाफ्टर शो देखता है।

मुसकराने से जीवन का तनाव और कड़वाहट समाप्त हो जाते हैं। इसीलिए कहावत है ''एक मुस्कान हजारों कुर्बान''। यह जिंदगी तो एक खेल की तरह है, खेल में हार और जीत दोनों हैं। जीतने के बाद तो सभी मुसकरा लेते हैं, यह बहुत सहज है लेकिन जो हार खाने के बाद भी मुसकराता है, उसका मूल्य समाज में बहुत बढ़ जाता है। हास्य-प्रिय लोग किसी भी बात का बुरा नहीं मानते। इतिहास में भी ऐसे अनेक व्यक्तियों का उदाहरण है जिनके जीवन में बहुत कठिनाई, दुःख, दर्द होने के बावजूद भी उन्होंने मुख से मुसकान को जाने नहीं दिया और इसी वजह से वे अपने दुःख को दूर करने के साथ-साथ औरों के जीवन में भी खुशी लाने में सक्षम बने। मुसकराता हुआ व्यक्ति बहुत सहज ही सभी को अपना बना लेता है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, श्री कृष्ण, विदूषक तेनाली रमण अथवा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि, वर्तमान मुख्य प्रशासिका दादी जानकी इसका ज्वलंत उदाहरण हैं।

अगर कभी किसी के प्रति ईर्ष्या अथवा द्वेष के कारण मन विचलित हो जाता है तो हम सभी को एक बात अवश्य ख्याल में रखनी चाहिए कि वर्तमान में हमें जो

कुछ मिला है, समाज में कइयों को उतना भी प्राप्त नहीं है। जब यह सोचेंगे तो अवश्य ही अपने भाग्य पर गर्व करते हुए जीवन व्यतीत कर पाएँगे। अगर कोई हमें नफरत, स्वार्थ अथवा घृणा की नजरों से देखे, फिर भी हम उस के प्रति प्रेम, करुणा एवं दया की भावना रखें तो हम सहज ही मुसकरा सकेंगे।

चेहरे की सच्ची सुंदरता मुसकान ही है। आजकल खूबसूरती के लिए क्रीम, पाउडर आदि से काले चेहरे को भी गोरा किया जाता है। मेकअप अथवा कॉस्मेटिक सर्जरी के द्वारा चेहरे की रूपरेखा ही बदल दी जाती है लेकिन इस प्रकार की सुंदरता तो क्षणिक और विनाशी है। असली सुंदरता तो मीठी मुसकान है, जो हमारी सच्चाई का प्रतीक है और सच्चाई को प्राप्त करने के लिए हर परिस्थिति में सकारात्मक दृष्टिकोण रखना जरूरी है। मुसकराता हुआ मुख एवं दमकती हुई आँखें भला किसे प्रभावित नहीं करेंगी, मुसकान से व्यक्तित्व आकर्षक बन जाता है।

मुसकान सिर्फ हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी बहुत बड़ा टॉनिक है। एक मीठी मुसकान सैकड़ों दवाइयों से बेहतर है। मुसकराने से हमारे शरीर की सभी कर्मेन्द्रियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और मन भी सक्रिय हो जाता है। तो आइए हम सभी मुसकान रूपी दवाई के द्वारा अपने जीवन से मायूसी के पर्दे को सदा के लिए हटाकर, हर दर्द को भुलाकर, जीवन को खुशी और आनंद के साथ जीएँ। ■■■

तुम्हारे प्यार की दौलत

तुम्हारे प्यार की दौलत हमारे पास बाकी है।
सदा तुम साथ हो दादी, हमें अहसास बाकी है।।
हमें मिलने लिए तुमने वो अपना सिन्ध भी छोड़ा ,
कभी न टूट पायेगा ये रिश्ता ऐसा है जोड़ा,
तुम्हें न भूल पायेंगे ये जब तक सांस बाकी हैं।
तुम्हारे प्यार की दौलत हमारे पास बाकी है।।
कल्प भर साथ में रहना, हमारा सबका सपना था,
अचानक यूँ चले जाना, फैसला तेरा अपना था,
थोड़े दिन और रुक जाते, अभी कुछ प्यास बाकी है।
तुम्हारे प्यार की दौलत हमारे पास बाकी है।।
हुए हो आँखों से ओझल फर्क क्या इससे पड़ता है,
दूरियाँ जितनी ज्यादा हों प्यार उतना ही बढ़ता है ,
मिलन एक बार फिर होगा वो सतयुगी रास बाकी है ।
तुम्हारे प्यार की दौलत हमारे पास बाकी है।।
तेरी सूरत, तेरी मूरत, हँसाती है, रुलाती है,
तेरी बातें, मुलाकातें, जगाती हैं, सुलाती हैं,
अव्यक्त में कर लें, जो बातें खास बाकी हैं ।
तुम्हारे प्यार की दौलत हमारे पास बाकी है।।
चुका कुछ भी न पाऊँगी, मोल उपकार के तेरे,
है बहुत छोटी तेरी दीपा, सामने प्यार के तेरे,
हाथ सिर पर तुम्हारा है, मेरे में विश्वास बाकी है।
तुम्हारे प्यार की दौलत हमारे पास बाकी है।
सदा तुम साथ हो दादी, हमें अहसास बाकी है।।

एक अनोखा संग्रहालय – शक्तिनिकेतन (इन्दौर हॉस्टल)

■■■ ब्रह्माकुमार राज नारायण भाई, केरावत, वाराणसी (उ.प्र.)

इन्दौर हॉस्टल की कुमारियाँ दादी जानकी जी से मुलाकात करती हुई

हम संग्रहालय देखने प्राय: अनेक स्थानों पर जाया करते हैं। संग्रहालय अर्थात् जहाँ पुरातत्व अथवा नवीकृत वस्तुओं का प्रदर्शन किया जाता है। प्रस्तुत लेख में हम जिस संग्रहालय का वर्णन करना चाहते हैं वह है 'चैतन्य परियों' का संग्रहालय। इसे चैतन्य देवियों का संग्रहालय या चैतन्य पावन मूर्तियों का संग्रहालय कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

हमने देखा आप भी देखो अनुपम पावन संग्रहालय,
यहाँ तो बसती परियाँ प्रियवर, ये तो सच्चा देवालय,
पावन इसकी छटा निराली, यद्यपि ये है शिक्षालय
पलती शिव शक्तियाँ यहाँ पे, निश्चित है ये शिव आलय ।।

शिव-भक्ति की प्रतिमूर्ति माँ अहिल्या की तपोस्थली, मालवा की सोनी माटी में बसे इन्दौर नगर के न्यू पलासिया में ओम्शांति भवन के पावन प्रांगण में परमपिता परमात्मा की एक सुन्दर रचना अपनी प्रभा चहुँ ओर बिखेर रही है। ये रचना है – 'शक्तिनिकेतन' उर्फ 'दिव्य जीवन कन्या छात्रावास'।

इस कन्या छात्रावास में भारत वर्ष के सभी प्रान्तों से एवं नेपाल व बांग्लादेश से लगभग 150 कुमारियाँ अपने लौकिक-अलौकिक पठन-पाठन के लिए निवास करती हैं। इनकी अलौकिक निवास लीला (पावन दिनचर्या) का वर्णन तो मैं शब्दों में कर नहीं सकता, मेरी कलम में वो क्षमता नहीं है। मेरी हार्दिक इच्छा रहती है कि इन नयनों से मैंने जो दमकती, महकती छवि निहार कर अलौकिक सुख पाया है, हर आत्मा वह सुखद अनुभव प्राप्त करे।

इस लेख के माध्यम से मैं उन समस्त माता-पिताओं का आह्वान करना चाहता हूँ जिनको भाग्यवती लाड़ली कम से कम कक्षा 5वीं या 6वीं उत्तीर्ण कर चुकी है, वे अविलम्ब इस कन्या छात्रावास का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त करें।

सफल हो जायेगा जीवन, चमक जायेगा भाग्य,
बढ जायेगा गौरव, ऊँचा हो जायेगा मात-पिता का भाल,
बन जाओगी साक्षात पावन देवी, हो जायेगा कमाल।

मेरी तीन बच्चियाँ आज मेरे सिर का ताज बनी हुई हैं, जो इसी शक्तिनिकेतन की देन हैं। मेरी हार्दिक शुभ-भावना एवं शुभ-कामना है कि हर पालक मेरे जैसा सौभाग्य प्राप्त करे। मैं देख रहा हूँ कि कई माता-पिता झूठी चमक-दमक की इस दुनिया में फंस कर बच्ची का जीवन नष्ट कर अन्त में पश्चाताप की अग्नि में जलने को विवश हुए हैं। मैं उनके लिए दो लाइनों में अपने भाव व्यक्त करता हूँ –

बच्ची को प्रियवर! किधर लिए जा रहे हो,
सुखद नहीं मंजिल बन्धु, गिधर जा रहे हो।

यहाँ की अद्भुत अलौकिक गतिविधियों में से कुछ सामान्य प्रयोजन की बातें लिख रहा हूँ –

शक्तिनिकेतन में कुमारियाँ निवास करते हुए इन्दौर के स्थानीय स्कूल-कॉलेज में (हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में) सामूहिक रूप से पढ़ने को जाती हैं। छात्रावास का परिणाम 100 प्रतिशत आता है। हर एक स्कूल-कालेज में छात्रावास को कन्याओं के लिये विशेष सीट आरक्षित रहती है। चूँकि परीक्षा में अच्छे अंकों से छात्रावास की कन्यायें उत्तीर्ण होती हैं इस कारण स्कूल-कॉलेज का स्तर उच्चतर होता है। इस प्रकार पूरे इन्दौर में इस छात्रावास का बहुत सम्मान है।

लौकिक पढ़ाई के साथ-साथ कुमारियों को अलौकिक पढ़ाई (Spiritual Knowledge) में भी पूर्णतया दक्ष किया जाता है जिससे कुमारियों का जीवन देदीप्यमान होना स्वाभाविक है। मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूँ कि शक्तिनिकेतन की कन्या लाखों की भीड़ में भी सहज पहचानी जा सकती है। इसकी एक छोटी-सी मिसाल है –

यहाँ से कन्यायें ग्रीष्मावकाश में 15 दिन की छुट्टियों पर घर जाती हैं। एक जगह की कई कन्यायें होती हैं तो सब सामूहिक रूप से जाती हैं। उनके साथ उनके कोई भी 2-3 पालक होते हैं। एक बार दिल्ली तरफ की कुछ कन्यायें अवकाश पूरा कर छात्रावास वापस आने के लिये दिल्ली बस स्टैंड पर एकत्रित हुईं और उनके साथ दो पालक थे। एक कन्या भूल-वश भटक गई। उस समय एक पालक ने दूसरे को कहा, 'आप इन बच्चियों के पास बैठिये, मैं ढूँढ़ कर लाता हूँ।' उनसे पूछा गया, 'उसे आप पहचानते हैं?' उन्होंने उत्तर दिया, 'जानता तो बिल्कुल नहीं पर पहचान लूँगा।' हुआ भी ऐसा ही, तत्काल वह भाई कन्या को लेकर आ गये। पूछा गया कि कैसे पहचाना तो जवाब था, 'लाखों के बीच से मैं इन्दौर हॉस्टल की कन्याओं को पहचान सकता हूँ।' निश्चय ही सहजयोग से पावन मुखमण्डल की आभा और सलीकेदार पहनावा सहज ही इन्हें भीड़ से ऐसे अलग करता है जैसे पत्थरों के बीच पड़ा हुआ हीरा पहचाना जाता है। इनका शुद्ध खान-पान, स्वच्छ रहन-सहन और ही सोने में सुहागा बन जाता है। हर कन्या को देख उसका पूजन-वन्दन करने का दिल होता है।

भारतीय संस्कृति के 'अतिथि देवो भव' के स्लोगन को इन देवी स्वरूपा कुमारियों ने बखूबी जीवन्त रखा है। मेहमान-नवाज़ी करना तो कोई इन प्यारी-प्यारी बच्चियों से सीखे। तभी तो मैं पूरे दिल से सभी माता-पिताओं का आह्वान करता हूँ कि अपनी बेटी को सच्चा जीवन दीजिये। कहा गया है, कुछ पाने के लिये कुछ खोना पड़ता है परन्तु ऐसा करने से आपको खोना तो कुछ नहीं है, बस पाना ही पाना है।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव है, मेरी तीनों ही कन्यायें इसी शक्तिनिकेतन की महती कृपा से अपने अभिष्ट स्थान को प्राप्त कर एवं सन शोज फादर (बच्चे पिता का नाम रोशन करते हैं) का स्लोगन साकार कर मुझे खुशियों का खजाना प्रदान कर रही हैं।

दिव्य जीवन कन्या छात्रावास की संपूर्ण जानकारी के लिये निम्न पते पर आप कभी भी सम्पर्क कर सकते हैं।

बी.के करुणा
शक्तिनिकेतन, ओम् शान्ति भवन, ज्ञान शिखर,
गेट नम्बर 2, न्यू पलासिया, इन्दौर-452001 (म.प्र.)
मो0-6260177249, 9425316843, 9425903328

आवश्यकता

निम्नलिखित पदों पर ग्लोबल अस्पताल माउण्ट आबू में सेवा (Job) हेतु भाई-बहनों की आवश्यकता है –

- मेडिकल ऑफिसर मोबाईल क्लिनिक – M.B.B.S
- फार्मेसिस्ट – D. Pharma
- लैब टैक्नीशियन – D.M.L.T.

उचित वेतन सुविधा,
संपर्क करें – 9414144062;
ई-मेल – ghrchrd@ymail.com

अहंकार पर विजय

■■■ ब्रह्माकुमार भारत भूषण, ज्ञान-मानसरोवर, पानीपत (हरियाणा)

शिव भगवान ने प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के साकार माध्यम द्वारा अन्तिम शिक्षा दी कि बच्चे निराकारी, निर्विकारी एवम् निरअहंकारी बनो। इस अन्तिम शिक्षा का अन्तिम शब्द है निरअहंकारी। स्वर्ग की दौड़ में पुरुषार्थी सब परीक्षायें काम, क्रोध, लोभ, मोह की पास करते हुए अंत मे अहंकार की पहाड़ी से लुढ़कता है और पुन: नर्क में जा गिरता है। बड़े-बड़े ज्ञानी, ध्यानी, विद्वान, सन्त, धर्मात्मा या किसी भी आध्यात्मिक संस्था के प्रमुखों के सामने सबसे बड़ी परीक्षा है अहंकार पर विजय। इस विजय के लिए अहंकार के सूक्ष्म रूपों को समझना अति आवश्यक है। किस-किस प्रकार से अहंकार वार कर सकता है, यह पहचान न होने के कारण ही धोखा खाते हैं। यहाँ हम अहंकार के 13 प्रकार लिख रहे हैं तथा उन पर विजय पाने के उपाय भी लिख रहे हैं।

1. देह का अहंकार:- अपने को शरीर समझना और अपने परिचय में देह के नाम, आयु आदि का स्मरण रहना, देहाभिमान कहलाता है। भगवानुवाच, पहले है देह भान, फिर देहाभिमान और उसी का बड़ा रूप देहअहंकार है। इसलिये जब भी देह की स्मृति में देही भूली हुई है तो निश्चित है कि देह अहंकार सवार है। यदि देह अहंकार सवार है तो विकर्म, पाप निरन्तर होते ही रहेंगे। इसलिये निरन्तर देही अभिमानी बनने का अभ्यास करें। पुन:-पुन: स्मृति दिलायें कि मैं एक आत्मा हूँ। एक महान आत्मा हूँ। हर कर्म करते हुए अपने से प्रश्न पूछते रहें कि कौन बोल रहा है, कौन देख रहा है, कौन सुन रहा है, कौन सोच रहा है, कौन कर्म कर रहा है। इससे स्वत: देह अहंकार पर विजयी होकर देही अभिमानी बन जाएँगे।

2. पद का अहंकार:- सांसारिक तौर पर जो भी पद या ओहदा प्राप्त होता है उसका भी मनुष्य को अहंकार आ जाता है। बात-बात में पद का अहंकार मनुष्य दर्शाता है। उसकी हर बात, भाव व सभी क्रिया-कलाप पद के अहंकार को दर्शाते हैं। इसलिये कभी भी इस अहंकार का प्रदर्शन न करें क्योंकि रावण की तरह अहंकारी का नाश होता है।

इस पर विजय पाने के लिये सदैव यह स्मृति रखें कि यह सृष्टि एक नाटकशाला है। इस नाटकशाला में हम सब आत्माएँ भाई-भाई समान हैं लेकिन थोड़े समय के लिये हम समान भाइयों को अलग-अलग पार्ट मिला है इसलिये अस्थाई पार्ट का अभिमान क्या करना। पार्ट तो कभी भी बदल सकता है।

3. उपलब्धियों का अहंकार:- जीवन में भागदौड़ कर, मेहनत कर मनुष्य कुछ उपलब्धियां हासिल कर लेता है। उनका भी उसको पुन:-पुन: स्मरण कर अभिमान चढ़ जाता है। जीवन में कुछ बड़े-बड़े पुरस्कार, कुछ मैडल, कुछ प्रतियोगिताएँ जीत कर बहुत वाह-वाह और सम्मान मिलता है तो स्वत: ही मनुष्य को उसका अभिमान आ जाता है।

सदैव समझें कि ये उपलब्धियां तो विनाशी हैं। इनके अभिमान से मनुष्य गिरता ही है। जीवन की असली उपलब्धि है आध्यात्मिकता के शिखर पर पहुंच कर परमात्मा पिता से विजय मैडल प्राप्त करना। विजय माला का मणका बनना। चाहे कितने भी अवार्ड प्राप्त किए हों, कितनी बार वर्ल्ड गिनीज बुक में नाम दर्ज कराया हो लेकिन परमात्मा की विजय माला का मणका नहीं बने तो ये सब अवार्ड किस काम के। इसलिये भावना एक मात्र इस उपलब्धि की रखनी

है कि मुझे विजय माला का मणका बनना है।

4. रूप-पर्सनैलिटी का अहंकार:- कुछ लोगों को शारीरिक सुन्दरता जन्म से ही प्राप्त होती है। वे रोज बार-बार आइने में अपने रूप को निहारते हैं। अन्य भी उनके व्यक्तित्व पर आकर्षित होते हैं। यदा-कदा उन्हें इस दैहिक रूप की प्रशंसा भी प्राप्त होती है। इन सब बातों से उनको अपने रूप या व्यक्तित्व का अभिमान आ जाता है जो कि सर्व विकारों को उत्पन्न करता है।

इससे छूटने के लिए देह की वास्तविकता पर विचार करें कि यह देह पंच तत्वों का पुतला है। इसके अन्दर तो हाड, मांस, खून और दुर्गन्ध भरी है। इसके नव दरवाजों से गन्दगी ही निकलती है। तो इस देह का क्या अभिमान करना! इसके अन्दर चमकती हुई मणि, जो कोहीनूर से भी अधिक मूल्यवान है, उस आत्मा का अभिमान ही सच्चा अभिमान है। उसी के रूप को बार-बार बुद्धि रूपी नेत्र से देखें या निहारें।

5. शिक्षा का अहंकार:- कई व्यक्तियों का शिक्षा का स्तर बहुत ऊँचा होता है। उन्होंने कई डिग्रियाँ प्राप्त की होती हैं। वे जब भी अपना परिचय देंगे तो शैक्षणिक डिग्री जरूर बताएँगे। उच्च स्तरीय आई.ए.एस., आई.पी.एस., पी.एच.डी. आदि डिग्रियों से सुशोभित व्यक्ति तो निम्न स्तरीय शैक्षणिक योग्यता वालों वा अनपढ़ों से बात करना भी पसन्द नहीं करते। इतना अहंकार चढ़ जाता है तथा दुर्व्यवहार भी कर देते हैं।

याद रखिए, सबसे बड़ी डिग्री है मानवीय मूल्यों की डिग्री। वह डिग्री गांव के किसी भोले-भाले इन्सान में हो सकती है। वह डिग्री है दूसरों का सम्मान करना, नि:स्वार्थ सेवा करना, मधुरभाषी होना, सर्व का सहयोगी होना, गुणग्राहक होना आदि-आदि। यदि किसी उच्च स्तरीय डिग्रीधारक में ये डिग्रीज नहीं हैं तो वास्तविकता यह है कि वह अशिक्षित ही है। उसके दुर्गुण समाज के प्राणियों को परेशान ही करते रहेंगे।

6. स्वस्थ जीवन का अहंकार:- कुछ लोगों को सौभाग्यवश स्वस्थ जीवन प्राप्त होता है। उसके अहंकार वश जो प्राय: बीमार एवम् रोगग्रस्त रहते हैं उन पर वे हँसते हैं और अपने स्वस्थ तन पर इतराते हैं। स्मरण रहे, स्वस्थ जीवन पूर्व में किए हुए कुछ श्रेष्ठ कर्मों का परिणाम है और इस पर अहंकार पुन: पतन का कारण बन सकता है। कई बार अहंकारी व्यक्ति भी अपने अहंकार से स्वास्थ्य को खराब कर लेते हैं। इसलिए अभिमान ना करके, स्वस्थ जीवन प्रदान करने वाले परमात्मा का बार-बार शुक्रिया करें।

7. सम्पत्ति का अहंकार:- कुछ लोगों के पास धन-सम्पत्ति, मकान-कोठियाँ, जमीन, बाग-बगीचे आदि हैं, पुन:-पुन: उनकी स्मृति से उनका भी अहंकार मन पर छा जाता है। अगर कोठी बहुत सुन्दर है तो कई बार उसकी याद आएगी और उसका वर्णन करेंगे। इसी प्रकार अन्य सम्पत्ति का भी उल्टा नशा चढ़ जाता है और गरीब व्यक्तियों से उस नशे के कारण दुर्व्यवहार करते हैं। याद रखें, परमात्मा को गरीब नवाज कहते हैं। खाली हाथ आए थे और खाली हाथ जाएँगे, यहां कुछ भी अपना समझना मिथ्या अहंकार है। न यह मेरा था, न रहेगा।

8. ज्ञान व आयु का अहंकार:- कई पुरुषार्थी अपनी वरिष्ठता को ज्ञान और आयु के हिसाब से आंकते हैं। वे सोचते हैं, मैं पुराना हूँ, मैं बहुत अनुभवी हूँ, मैं वरिष्ठ भाई वा वरिष्ठ बहन हूँ। दूसरे चाहे कितने भी अधिक ज्ञान-योग में प्रवीण हों, फिर भी वे उनको अपने से कनिष्ठ समझ व्यवहार करते हैं। ज्ञान-योग की आयु से अपनी वरिष्ठता को कभी भी नहीं आंकें। हो सकता है, कोई कम आयु में भी ज्ञान-योग और सेवा में हमसे काफी आगे हो, लास्ट सो फास्ट हो। हमें उसे भी वरिष्ठ समझ रिगार्ड देना चाहिये।

9. गुणों का अभिमान:- यह बहुत सूक्ष्म अभिमान है। मान लीजिए, किसी को जीवन में अनेक दिव्य गुण प्राप्त हैं। कभी-कभी गुणधारी को उन गुणों का भी अभिमान हो जाता है। अपने त्याग का भी अभिमान आ जाता है, अपने मर्यादित जीवन का भी अभिमान आ जाता है।

इसलिये सदैव याद रखें कि ये गुण परमात्म देन हैं। इन्हें परमात्म देन समझ उन्हीं के कार्य में लगाना है। कभी भी इनका अभिमान नहीं करना है। त्याग का भी त्याग करना है। वर्णन नहीं करना है। सदा गुप्त पुरुषार्थी बनना है।

10. भाषण का अभिमान:- कुछ लोगों को वक्तव्य कला प्राप्त है। उनका भाषण बहुत प्रभावशाली होता है। जहां भी प्रवचन करते हैं, उनकी खूब प्रशंसा होती है। प्रशंसा बार-बार प्राप्त होने से फिर वो उसे अपनी विशेषता समझ लेते हैं, जिससे अहंकार आ जाता है।

भाषण करने से पूर्व सर्वशक्तिवान, ज्ञान भण्डार परमात्मा को याद कर फिर प्रवचन करें और उसकी याद में करें और यह निश्चय रखें कि मेरे द्वारा वो ही करवा रहा है। इससे अभिमान नहीं आएगा और प्रवचन भी प्रभावशाली होगा। प्रवचन के पश्चात् जितनी भी प्रशंसा मिले, उसे परमात्मा को ही सुपुर्द कर दें। खुद स्वीकार ना करें।

11. टीचर या गुरु पद का अहंकार:- मैं शिक्षिका या शिक्षक हूँ या मैं गुरु हूँ। दूसरे को स्टूडेन्ट या शिष्य समझना भी मिथ्या अभिमान है। सदैव अपने को विद्यार्थी समझना है। सदैव सीखने की भावना रखनी है। हर एक व्यक्ति टीचर भी है तो विद्यार्थी भी है, ऐसा बैलेन्स कायम रखना है।

12. सेवाओं का अहंकार:- कितनी भी विशाल या विहंग मार्ग की सेवा करें। सेवाओं की धूम मचा दें। देश-विदेश में छा जाएँ। आपकी सेवाओं के खूब चर्चे हों। फिर भी जरा भी अभिमान ना आए। यह पक्का याद रहे कि करन करावनहार शिव बाबा परमात्मा है। हम सब निमित्त हैं। यह मैंने अकेले ही नहीं किया। सबके सहयोग से किया है।

13. योग का अहंकार:- कुछ पुरुषार्थी योग की उच्च अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं। योग की अच्छी अनुभूतियाँ भी कर लेते हैं। लम्बा समय योग-तपस्या में भी व्यतीत करते हैं लेकिन कभी-कभी अपने श्रेष्ठ योगी जीवन का भी अभिमान आ जाता है। वैसे तो योगी सदैव अहंकार मुक्त होता है लेकिन योग निरन्तर नहीं रहता इसलिये जब योग नहीं होता तो अपने योगी जीवन का भी अभिमान आ जाता है इसके लिये निरन्तर योगी बनने का प्रयास करें।

निरअहंकारिता को अपनाने के लिये कुछ बातें ध्यान में रखें –

- रोजाना कुछ समय स्थूल सेवा, छोटी-छोटी सेवाओं में जरूर व्यतीत करें, जैसे – बर्तन माँजना, सफाई करना आदि-आदि जरूर करें।
- सदा बड़ों के सामने जी हाँ का पाठ पक्का करें। कभी उनके सामने जिद्द ना करें, सामना ना करें।
- छोटे भाई व बहनों को बहुत प्यार से चलाएं। उन्हें पितृवत्, मातृवत् स्नेह देकर चलाएँ, तो बहुत दुआएं मिलेंगी।
- हरेक से कुछ सीखने की भावना रखें। दिल से रिगार्ड दें।
- हरेक को दिल से प्रशंसा करें।
- अपने समय, एनर्जी आदि कुछ भी केवल हद की सेवाओं के प्रति नहीं लगाएँ, बेहद में भी लगाएँ।
- सदैव पुन:-पुन: याद करें कि करन करावनहार शिव बाबा हैं। ■■■

देवताओं का सोना और जागना

■■■ ब्रह्माकुमारी प्रिया कटरे, वारासिवनी (मध्य प्रदेश)

भारत में यह मान्यता है कि देवताओं का सोने और जागने का निश्चित समय होता है। मान्यता के अनुसार, कार्तिक शुक्ल एकादशी को प्रबोधिनी एकादशी का पर्व मनाया जाता है और आषाढ़ की पूर्णमासी को देवताओं का शयन प्रारम्भ दिखाते हैं। इस पूर्णमासी के अगले ही दिन श्रावण मास की शुरुआत हो जाती है और लोग बड़े धूमधाम से उपवास, पूजा, अर्चना शुरू कर देते हैं। श्रावण मास में सत्यनारायण की कथा और अखंड रामायण का पाठ आदि भी रखे जाते हैं। कहा जाता है, 'आई तीज, बो गई बीज' अर्थात् श्रावण की तीज के बाद त्योहारों की कड़ी जुड़ती चली जाती है, जैसे कि रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, नवरात्रि, दशहरा, दीपावली आदि-आदि। उपरोक्त मान्यता के अनुसार, यदि इस काल में देवी-देवतायें सोए हुए रहे तो भक्तों को पूजा का फल कौन देता है? क्या सोए हुए देवता भक्ति को स्वीकार कर सकते हैं? और फल भी दे सकते हैं क्या? इस पहेली को हल करने के लिए हमें यह जानना होगा कि देवी-देवता हैं देहधारी और परमात्मा हैं निराकार। गायन में देवी-देवताओं की संख्या 33 करोड़ कही गई है और परमात्मा तो एक ही हैं, जो त्रिदेव सहित सभी देवी-देवताओं के रचयिता हैं। सतयुग-त्रेता की कुल आबादी 33 करोड़ है जिन्हें हम पूर्वज और पूजनीय रूप में मानते हैं। ये देवतायें द्वापरयुग में वाममार्ग में जाकर अपने पूज्यपद से उतरती कला की ओर चले जाते हैं। कलयुग का अन्त आते-आते कलाहीन होकर अति साधारण बन जाते हैं। कलयुग के अन्त में, संगमयुग पर परमपिता परमात्मा अवतरित होकर, अपने ज्ञान की गंगा के शीतल छींटे डालकर अज्ञान निद्रा से इन्हें जगाते हैं और अगले कल्प में पुन: देवी-देवता पद दिलवाते हैं। इस प्रकार आधाकल्प देवतायें जाग्रत रहते हैं और आधाकल्प अज्ञान निन्द्रा में सो जाते हैं। भक्ति में इसी की यादगार में देवताओं का सोना और जागना वर्णित किया गया है।

ऊपर हमने एक प्रश्न उठाया है कि क्या सोए हुए देवता भक्ति का फल दे सकते हैं या यह फल देने वाला कोई और है? वास्तव में परमात्मा पिता तो सदा जागती ज्योत हैं। उनके लोक परमधाम में तो न सूर्य-चाँद की रोशनी है, न दिन-रात के रूप में समय का विभाजन, इसी कारण संकट आने पर भक्त, भगवान को पुकारते हैं तो यह नहीं देखते कि दिन है या रात, जब चाहे पुकार लेते हैं। भगवान शिव जीवन-मरण, बाल-युवा-वृद्ध आदि चक्रों से परे सदा एकरस, सर्वोच्च और सदा दाता हैं। वे न शारीरिक नींद लेते (शरीर है ही नहीं), ना माया के वशीभूत अज्ञान की नींद लेते (सदा मायाजीत हैं)। अत: देवी-देवताओं के नाम पर की जाने वाली भक्ति का फल देने वाले भी एक मात्र पिता परमात्मा ही हैं। इस बेहद के मानवीय कुल की सभी आत्माओं की मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाले, बेहद के एक पिता परमात्मा शिव ही हैं। यदि हम उन एक को याद करें तो हमारी मनोकामनाएँ तो पूर्ण होंगी ही, हम औरों की मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाले भी बन जाएँगे। ■■■

होली पर्व पर विशेष ...

ज्ञान रंग बरसे

ब्रह्माकुमारी वीरबाला, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

भारत एक आध्यात्मिक देश है। यहाँ समय प्रति समय अनेक त्यौहार मनाये जाते हैं जो कहीं ना कहीं धार्मिक व आध्यात्मिक धाराओं से जुड़े हुए हैं। इन त्यौहारों में जहाँ एक ओर हँसी- खुशी, चहल-पहल, खाना-पीना, गाना-बजाना आदि मनोरंजन के साधन रहते हैं वहीं इनका आध्यात्मिक रहस्य भी रहता है। इन त्यौहारों से सम्बन्धित अनेक पौराणिक कथायें व कहानियाँ भी प्रचलित हैं।

जीवन रूपी चुनरी पर स्नेह का रंग

इस क्रम में होली उत्सव का भी बड़ा महत्व है। फाल्गुन की रंगीन फुहारों के बीच रंगों का यह त्यौहार आता है और चला जाता है परन्तु कलियुग के अन्त में एक समय ऐसा आता है जब परमात्मा स्वयं धरा पर अवतरित होकर आत्माओं के ऊपर ज्ञान, शान्ति, गुण और शक्ति आदि दिव्य रंगों की बरसात करते हैं। इन दिव्य गुणों रूपी रंगों से सराबोर होकर आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने लगती है। साकारी तनधारी आत्मा अपने साजन परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह उसकी जीवन रूपी चुनरी अपने आनन्द रूप के स्नेह में ऐसा रंग दे जिसका पक्का रंग कभी ना उतरे, किसी भी परिस्थिति व परीक्षा का उस पर असर ना पड़े। आत्मा से आवाज निकलती है – ऐसी रंग दे, रंग ना छूटे, धोबी धोये चाहे सारी उमरिया।

देह रूपी चुनरी में लिपटी आत्मा

उसकी चुनरी कोई साधारण चुनरी नहीं है बल्कि प्रकृति के पाँचों तत्वों से बनी हुई शरीर रूपी चुनरी है जिसे बिन्दु स्वरूप आत्मा ने धारण किया है। निराकार आत्मा शरीर द्वारा ही संसार में पार्ट बजाती है। शरीर के अन्दर स्थित आत्मा को स्थूल नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। शरीर में जब तक आत्मा है तब तक जीवन है। आत्मा निकल जाती है तो शरीर निर्जीव-निष्प्राण हो जाता है। आत्मा अच्छा या बुरा जैसा भी पार्ट बजाती है उसका दिग्दर्शन शरीर द्वारा होता है। कर्मों के आधार पर ही किसी को महात्मा, किसी को पापात्मा, किसी को श्रेष्ठाचारी, किसी को भ्रष्टाचारी कहा जाता है। देह की चुनरी में लिपटी इस आत्मा का बाह्य जगत से सम्बन्ध इस शरीर द्वारा ही होता है। जन्म के बाद शरीर को एक नाम मिलता है। शक्ल और नाम से उसकी पहचान होती है। शरीरों के नाम और रूप अलग-अलग होते हैं। सभी आत्माओं का रूप और नाम समान होता है। आत्मा के बिना जहाँ शरीर मुर्दा है वहीं आत्मा भी शरीर के बिना कुछ नहीं कर सकती।

आत्माओं की पुकार सुनकर आते हैं परमात्मा

कलियुग का अन्त आते-आते मनुष्यात्माओं की जीवन रूपी चुनरी में काले धब्बे पड़ जाते हैं जिन्हें साफ करने का उपाय मनुष्यों को नहीं आता। भक्त आत्मायें परमात्मा को पुकारने लगती हैं, 'हे प्रभु, हमारे विषय विकार मिटाकर हमें भक्ति प्रदान करो' और 'लागा चुनरी में दाग छुड़ाऊँ कैसे, अब घर जाऊँ कैसे?' लम्बे समय तक भक्तों की पुकार सुनते-सुनते भगवान को नर तन का आधार ले इस धरा पर अवतरित होना पड़ता है। वे माता के गर्भ से जन्म ले शरीर के बन्धन में नहीं आते

अपितु मनुष्य सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ आत्मा श्रीकृष्ण के अन्तिम जन्म वाले शरीर में प्रवेश कर भक्तों की मनोकामना पूर्ण करते हैं। श्रीकृष्ण को श्याम सुन्दर भी कहा जाता है। श्याम कैसे सुन्दर बनते हैं और सुन्दर कैसे श्याम बनते हैं, सृष्टि चक्र की यह कहानी परमात्मा ही आकर सुनाते हैं। ब्रह्मा के मुखकमल से गीता ज्ञान देकर शिवबाबा नये दैवी युग की स्थापना करते हैं और यज्ञवत्सों द्वारा कराते भी हैं। भक्तवत्सल भगवान से मिलने का यही संगम समय है। भक्तों के अतिरिक्त साधू-सन्त-महात्माओं, धर्मपिताओं आदि सभी को भक्ति का फल प्राप्त करने का समय भी यही है।

रूहानी रंग चलते हैं 21 जन्म

होली के रंगों के मध्य हम उत्सुक थे ऐसे आध्यात्मिक रंग के जो कभी ना मिटने वाला हो। जिसमें रंगकर जीवन पवित्रता, सुख, शान्ति, ज्ञान, प्रेम और आनन्द से भर जाये। इसके लिये जरूरी है कि आत्मा भी शरीर रूपी चुनरी में हो और परमात्मा भी साकार मनुष्य रूप में हो। वास्तव में अब वही सुहावना समय है जब परमात्मा हम आत्माओं को ज्ञान-योग की शिक्षा देकर पवित्र बना रहे हैं। होली अर्थात् पवित्र आत्मा में ही दिव्य गुणों की धारणा हो सकती है। परमात्मा आत्माओं को उनके स्वरूप का परिचय देकर धरती के रंगमंच पर उत्तम से उत्तम पार्ट बजाने की शिक्षा देते हैं। परमात्म प्यार में लवलीन आत्मा का जीवन गुलाब के फूल की तरह सुन्दर व सुगन्धित हो जाता है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त इन रूहानी रंगों का रंग एक जन्म तो क्या 21 जन्मों तक चलता रहता है। ■■■

श्रद्धांजलि

यज्ञ की आदि रत्न, बापदादा की अति लाडली, दिल्ली ज़ोन की ज़ोनल इन्चार्ज आदरणीया रुकमणि दादी, जिन्होंने अभी-अभी अपनी जीवन-यात्रा के 100 वर्ष पूरे किये थे। दो जनवरी को मधुबन में उनका बर्थ डे सभी ने खूब धूमधाम से मनाया था। उसके पहले दिल्ली ओ.आर.सी. में भी वहाँ के सभी निमित्त बहन-भाइयों की उपस्थिति में जन्मदिन मनाया गया था। लौकिक में आप आलराउन्डर दादी की छोटी बहन, गुलजार दादी की लौकिक मौसी थी। आप गुलजार दादी के साथ-साथ पूरे ज़ोन की बहुत अच्छी रेख-देख करती रही। अभी कुछ दिनों से आप शान्तिवन में ही थी। आपकी तबियत ठीक नहीं थी इसलिए अहमदाबाद लेकर गये। सोलह जनवरी को आपके आग्रह पर अहमदाबाद से ग्लोबल हॉस्पिटल में लेकर आये और सत्रह जनवरी सुबह 12.33 पर दादी जी अपना पुराना शरीर छोड़ प्यारे बापदादा की गोद में चली गई। अन्त तक आपकी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र रही। हर एक की आवाज से ही उन्हें पहचान लेना, उन्हें हर प्रकार से गाइड करना, सबको श्रीमत प्रमाण चलाना, स्व-उन्नति के लिए सही राय देना, हर एक के दिल को समझकर उन्हें सन्तुष्ट करना, ये सेवा आप अन्त तक करती रही। ऐसी निमित्त, यज्ञ की आधार स्तम्भ दादी जी के प्रति सम्पूर्ण दैवी परिवार अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है। ■■■

निराश न हों

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम (हरियाणा)

हमने क्रोध को नहीं रोका तो वो निराशा के रूप में बदल जाता है। बहुत बार हम कहते हैं कि आज मैं बहुत निराश हो गया हूँ। जब मेरी चीजें, मेरे अनुसार नहीं होती हैं तब निराशा होती है। इसमें भी हम दूसरे लोगों को बदलने की कोशिश करते हैं, उनको अपने अनुसार चलाने को कोशिश करते हैं, परिस्थितियों को संभालने की कोशिश करते हैं, इसके लिए मुझे अपने आपको बहुत प्यार से समझाना पड़ेगा कि लोग और परिस्थितियाँ अपने अनुसार ही चलेंगे। मेरी भूमिका है, मैं उनको राय दूँ, मार्गदर्शन दूँ लेकिन इसके बाद अपने आपको रोक दूँ। अगर फिर मेरे अनुसार नहीं हुआ तो मैं निराश नहीं होऊँगी।

कई बार हमें औरों के प्रति गुस्सा आता है तो हम उसे इतना ज्यादा अंदर भर लेते हैं कि हम गुस्से के अलावा और कुछ सोचते ही नहीं हैं। किसी ने मेरे साथ गलत किया है, किसी ने मुझे धोखा दिया है, किसी ने मेरे जीवन को ही बर्बाद कर दिया है तो इस कारण से भी मुझे गुस्सा आता है। वो व्यक्ति मुझे पसंद भी नहीं आता है। मैंने उसके बारे में कोई बात पकड़ ली जिसे मैं जीवनभर भूलने वाली नहीं हूँ।

वास्तव में मैं उसे भूलना ही नही चाहती हूँ। कितनी बार वो जिद्द, मेरे जीवन का एक लक्ष्य बन जाती है और हम ये कहते हैं कि घाव रिसता है तो रिसता ही रहे, यही अच्छा है। लेकिन घाव अगर वहीं रहा और हर बार याद आता रहा तो उस घाव की हालत क्या हो जायेगी? हर समय हमें ये जाँचना पड़ेगा कि बात को पकड़कर रखने से नुकसान किसका हो रहा है। इसे पकड़कर रखने से सिर्फ और सिर्फ मेरा नुकसान होता है। अगर मुझे छोड़ना है तो सिर्फ और सिर्फ अपने लिए छोड़ना है, न कि दूसरे के लिए। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो यह सोचते हैं कि उन्होंने मेरे साथ इतना गलत किया, हम क्यों भूल जायें? आप अपने कल्याण के लिए उस बात को भूल जायें। यह उन अपने लोगों के प्रति होता है जिनके साथ हमें हर दिन रहना है। अब अगर हम साथ-साथ रहते हुए इन सब चीजों को अपने अंदर जमा करके रखते हैं तो यह बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न है। ऐसे में, जिस घर में हम रहे हैं वहाँ सबकी मानसिक स्थिति कैसी होगी?

मैं महसूस करती हूँ कि उन्होंने मेरे साथ गलत किया इसलिए मेरा गुस्सा करना जायज है। मान लो, मेरी अपेक्षायें उनसे पूरी नहीं हुई लेकिन मेरे गुस्से को कोई भी सही नहीं कहेगा। सारा दिन हमें एक-दूसरे के साथ रहना है और इस नकारात्मक ऊर्जा के साथ हम परस्पर कार्य करते हैं। हमने अपने अन्दर क्या भरके रखा हुआ है क्योंकि जो भरकर रखेंगे वही बाहर आयेगा। कुछ परिवारों में समस्या या परिस्थिति आ गयी जिसके कारण उनकी आपसी दूरी बढ़ गयी। अब परिस्थिति खत्म हो गई, हम वापिस इकट्ठे काम कर रहे हैं या इकट्ठे घर पर रह रहे हैं लेकिन उस ऊर्जा को अभी तक पकड़ा हुआ है, तो इसे क्या कहेंगे? आपसी संबंधों में दखल करना।

कई बार हम उस बात को ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं जिसके कारण ये परिस्थिति आयी, इसके पीछे हमारा उद्देश्य क्या होता है? कहीं ना कहीं उनको ये बताना कि उन्होंने कितनी बड़ी गलती की है अर्थात् आप गलत हैं, मैं सही हूँ। उन्होंने क्या गलती की, उनको इसका एहसास कराना ही हम अपनी जिम्मेवारी मान लेते हैं। वो सारी सीख किसके लिए हो रही है, बीती हुई घटना का पूरा विवरण किसके लिए हो रहा है? सिर्फ उनको समझाने के लिए।

आप ये देखो, हम जब भी बैठते हैं ना बात करने के लिए तब सामान्यतया हमारा जो ऊर्जा का स्तर है वो ये होता है कि मैं दूसरे को समझा दूँ कि तुम गलत हो। उन्होंने गलत समझकर नहीं किया था। उन्होंने अपनी समझ से उस समय सही ही किया था। किसी परिस्थिति में मान लो कि एक निर्णय गलत हुआ, निर्णय गलत हो सकता है लेकिन व्यक्ति नहीं। हम जो यह ऊर्जा भेजते हैं कि आप गलत हो, तो ये ऊर्जा हमारे संबंधों में कड़वाहट लेकर आती है। छोटी-छोटी बातों में कि बच्चों को ज्यादा नंबर नहीं मिले, तब पति-पत्नी आपस में एक-दूसरे के ऊपर दोषारोपण करते हैं। क्या ऐसा होना चाहिए? नहीं। यह कोई प्रतियोगिता नहीं है, जो हम यह सिद्ध करें कि तुम गलत थे, मैं सही था। हमें कभी भी इसके लिए जिद्द नहीं करनी चाहिए। जिससे वो गलती होती है वो अपने आपको कितना दोषी महसूस करता है। वास्तव में हमारा कर्त्तव्य यह होना चाहिए कि अपने व्यवहार से उनको सुख दें जिससे कि वो उस गलती से, उस दर्द से बाहर निकल सके। ■■■

आज का कर्म, कल का भाग्य

■■■ विजयराज सुराणा, चन्द्रनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

महात्मा बुद्ध के एक परम भक्त की मृत्यु होने पर, भक्त के पुत्र ने सोचा कि अंत्येष्टी के बाद होने वाला मंत्र-पाठ किसी आम पंडित से न करवाकर, महात्मा बुद्ध से ही कराऊँ ताकि पिता को स्वर्ग मिलना सुनिश्चित रहे। पुत्र ने महात्मा बुद्ध से उपरोक्त निवेदन कर दिया।

महात्मा बुद्ध उसका कथन सुनकर मुस्कराये और कहा, आप एक पत्तल के दोने में पत्थर के टुकड़े व दूसरे दोने में मखाने रखकर ले आओ। वह प्रसन्न मन से दोनों वस्तुएँ ले आया। महात्मा बुद्ध ने कहा, नदी किनारे जाकर इन दोनों को बहा दो और कुछ देर मंत्रोच्चारण करके, आकर मुझे परिणाम बताओ।

व्यक्ति ने वैसा ही किया और कुछ देर बाद आकर महात्मा जी को बताया कि पत्थर वाला दोना तो नदी में तुरन्त डूब गया परन्तु मखाने वाला तैरता-तैरता आगे निकल गया तब महात्मा बुद्ध ने उसे सुझाव दिया कि अपने मंत्रवादी पण्डित को भी वहाँ ले जाकर, उनसे मंत्र पढ़वा लो। यदि पत्थर वाला दोना ऊपर आ जाए या मखाने वाला दोना डूब जाये तो आकर मुझे बताना। कुछ समय बाद उस व्यक्ति ने बताया कि ऐसा कुछ नहीं हुआ। मखाने वाला दोना तैरता ही रहा एवं पत्थर वाला वापस ऊपर नहीं आया।

तब उसे समझाते हुए महात्मा बुद्ध ने कहा कि व्यक्ति अपने जीवन में जैसा भी घटिया या बढ़िया कार्य करता है, वैसा ही उसका कर्मबंधन या कर्मसम्बन्ध हो जाता है और वैसा ही फल मृत्यु के बाद उसे प्राप्त होता है। अच्छे किये गये कार्य मखाने की तरह हल्के होते हैं, जो उसको भावी जीवन में तार देते हैं यानि डुबोते नहीं हैं। घटिया व फरेब के काम कंकर की तरह भारी होते हैं, जो भव सागर में डुबो देते हैं। अतः अब पिता की मृत्यु के बाद चाहे कितने भी ब्रह्म-जाप करो या मंत्र-पाठ कराओ, कोई असर नहीं होगा। आपके पिता ने अपने जीवन में जैसे भी अच्छे या बुरे कर्म किये हैं, उनके अनुरूप ही उसके भावी जीवन की गति होगी।

उपरोक्त दृष्टांत का यही सन्देश है कि मनुष्य को हमेशा अच्छे व प्रिय काम करने चाहियें ताकि मृत्यु के बाद अच्छी गति हो। इसमें अन्य कोई भी महात्मा, मंत्रवेत्ता या पण्डित सहयोगी नहीं हो सकता। ■■■

1.बिदर- मेडिटेशन हाल का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.प्रतिमा बहन तथा ब्र.कु.प्रभाकर भाई। **2.गुमला-** शाश्वत यौगिक खेती विषय पर चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में हैं महामहिम राज्यपाल बहन द्रौपदी मूर्मू, ब्र.कु.शान्ति बहन, चार्टर्ड अकाउंटेंट भ्राता विनोद बंका, एडवोकेट भ्राता नवीन गुप्ता, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य। **3.खोरधा-** 'स्वर्णिम युग के लिए विश्व में ज्ञान उदय' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता प्रसन्न कुमार पाटशाणी, ब्र.कु.कमलेश बहन, ब्र.कु.सुलोचना बहन, ब्र.कु.अरुण पण्डा तथा अन्य। **4.पोखरा-** राजयोग गहन साधना कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शोभा बहन, पतंजलि योगगुरु भ्राता लक्ष्मण पौडेल, सांसद भ्राता राजीव पहारी, समाजसेवी भ्राता रामजी कोइराला, ब्र.कु.परणीता बहन, ब्र.कु.शैलेश राज बराल तथा अन्य। **5.ब्रह्मपुर (बी.यू.आर.सी.)-** आर्ट ऑफ सेल्फ इन्जीनियरिंग विषयक महासम्मेलन में मंच पर शिवध्वज लहराते हुए के.के.कलस्टर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भ्राता अमेन्द्र मिश्रा, अधीक्षक इंजीनियर भ्राता सरत चौधरी, ब्र.कु.मोहन सिंघल भाई, ब्र.कु.भारतभूषण भाई, ब्र.कु.मंजू बहन, ब्र.कु.माला बहन तथा अन्य। **6.कड़पा-** 'इनर पीस इन केओस' विषयक कार्यक्रम के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं ब्र.कु.उषा बहन, ब्र.कु.गीता बहन, योगी वेमाना यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर भ्राता रामचन्द्र रेड्डी तथा अन्य। **7.डालटनगंज (गुमला)-** निलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.सतेन्द्र नारायण सिंह को प्यूरिटी पत्रिका तथा अन्य ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.कंचन बहन। **8.देवगढ़-** राजमाता अरूंधती देवी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुशीला बहन। **9.बरौली-** प्रधानाचार्य भ्राता सुशील कुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पूनम बहन।

1.जगन्नाथपुरी- राष्ट्रीय न्यायविद् सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए न्यायमूर्ति भ्राता ईश्वरैय्या जो, न्यायमूर्ति भ्राता ए.एस.पाच्छापुरे, प्रो.डॉ.रश्मि एम.ओझा, ब्र.कु.लता बहन, ब्र.कु.डॉ.निरुपमा बहन तथा अन्य। **2.आस्का**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए तहसीलदार भ्राता गदाधर पात्र, नेशनल अवार्डी टीचर भ्राता विमल प्रसाद पट्टनायक, ब्र.कु.प्रभाती बहन तथा अन्य। **3.वीरगंज**- मेयर भ्राता विजय कुमार सरावगी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रविना बहन। **4.विक्रमगंज**- अंचल अधिकारी भ्राता अजीत कुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुनिता बहन। **5.खेलारी (गुमला)**- एन.के.डकरा क्षेत्र के महाप्रबंधक भ्राता एम.के.राव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कंचन बहन। **6.मैसूर**- सुरक्षा बलों के लिए आयोजित तनावमुक्ति कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ.ई.वी.स्वामीनाथन, ब्र.कु.अशोक गाबा, आर.पी.एफ.के क्षेत्रीय सुरक्षा आयुक्त भ्राता के.एस.कब्बुर, ब्र.कु.शुक्ला बहन, ब्र.कु.लक्ष्मी बहन तथा अन्य। **7.गौदगुदा (कोरापुट)**- विधायक भ्राता कैलाश चन्द्र तथा सरपंच भ्राता डी.मुडुली को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नीलम बहन। **8.राजविराज**- महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ.बहन सुनिता यादव, शिक्षिका बहन रेणुका कर्माचार्य, ब्र.कु.रामचन्द्र भाई, ब्र.कु.भगवती बहन तथा अन्य। **9.मान्झागढ़**- प्रखण्ड पदाधिकारी भ्राता वेदप्रकाश को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अंगूर बहन।

(पृष्ठ 3 का शेष भाग) शिवरात्रि का ....

ज्ञान देते रहे हैं और आज हम उनके दिव्य अवतरण को 83वीं जयन्ती मना रहे हैं। प्राय: लुप्त गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा हम जीवात्माओं को पतित से पावन बनाकर पावन, सतोप्रधान, सतयुगी दैवी स्वराज्य (रामराज्य) की पुनर्स्थापना कराने के लिए स्वयं पतित पावन, निराकार परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' की स्थापना की और इस आध्यात्मिक क्रान्ति द्वारा आगामी वर्षों में होवनहार महाभारी महाभारत महाविनाश के पश्चात् पावन रामराज्य की स्थापना का महानतम् कार्य निश्चय रूपेण सम्पन्न हो जायेगा।

शिव के लिए सौगात

आज हम अनेक जयन्तियाँ मनाते हैं। लेकिन पतित पावन, परमप्रिय, परमपूज्य, पारलौकिक परमपिता परमात्मा शिव की दिव्य जयन्ती ही 'हीरे तुल्य' है। इसकी तुलना में अन्य मनुष्यात्माओं की जयन्तियाँ कौड़ी तुल्य ही हैं। अत: पतित पावनी शिव जयन्ती हमें कितने उल्लास और उत्साह से मनानी चाहिए. जन्मोत्सव मनाते समय सौगात देने की भी प्रथा है। भला आप परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य जन्मोत्सव पर क्या सौगात देंगे? शिव पर तो अक-धतूरा ही चढ़ाया जाता है। संकटमोचन, महाकालेश्वर परमात्मा शिव ने मानवता के कल्याणार्थ हलाहल पान किया था। आज वे पुन: सृष्टि का विषपान कर रहे हैं। अत: आप भी जीवन में दु:ख-अशान्ति पैदा करने वाले काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी हलाहल, शिव को अर्थात् मृत्युन्जय, पतित पावन परमात्मा शिव को भेंट चढ़ा दें और स्वयं पावन बन मानव मात्र को पावन निर्विकारी बनाने का पान का बीड़ा उठावें। फलस्वरूप आपको पूर्ण पवित्रता, सुख, शान्ति का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार अवश्य ही प्राप्त हो जायेगा।

शिव संदेश

हे माया की मादक नींद सोने वाली जीवात्माओ, उठो! जागो! क्या तुम्हें दिखलाई नहीं पड़ता कि जिस पतित पावन परमात्मा शिव को तुम जन्म-जन्मान्तर से पुकारते आये हो, जिससे मिलने के लिए तुमने कठोर तपस्या की है और जंगल, कन्दराओं, गुफाओं की खाक छानी है वह प्रेम सागर परमात्मा तुमको पतित से पावन बनाने के लिए अपना परमधाम छोड़ इस सृष्टि-मंच पर स्वयं आ कर्त्तव्य कर रहा है। तुम अब देह-अभिमान छोड़ आत्मा का जागरण करो। पूर्ण पवित्रता का सच्चा व्रत लो। विकारों का उपवास करो। माया का विषपान छोड़ ईश्वरीय ज्ञानामृत का पान करो और इस अन्तिम जीवन के अन्तिम क्षणों को आध्यात्मिक प्रेम और ईश्वरीय याद से परिप्लावित कर दो। इसके फलस्वरूप तुम्हें 21 जन्मों के लिए अमर देवपद की प्राप्ति होगी जहाँ मृत्यु का प्रवेश भी न होगा, प्रेम का अखण्ड साम्राज्य होगा, घी-दूध की नदियाँ बहेंगी तथा हीरे-जवाहरात से सुसज्जित स्वर्ण महलों में तुम्हारा निवास होगा। ■■■

सदस्यता शुल्क :

(भारत) वार्षिक: 100/- आजीवन : 2,000/-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनी ऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: Bank: State Bank of India, A/c Holder Name : Gyanamrit, A/c No: 30297656367
Branch Name : PBKVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

Mobile: 09414006904, 09414423949, Email : hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।

मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक - ब.कु. उर्मिला, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :

E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50. Issue : March, 2019.

शान्तिवन (आबू रोड)- 'माइंड-बॉडी मेडिसिन' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, उ.प्र मेडिकल साइंस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.राजकुमार, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु.डॉ.प्रताप मिड्ढा जी, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई, डॉ.बनारसी लाल भाई तथा अन्य।

नई दिल्ली- विज्ञान, अध्यात्म, शिक्षा और पर्यावरण विषय पर वैश्विक शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए जल ससाधन एवं पार्लियामेंट्री अफेयर्स केन्द्रीय राज्यमंत्री भ्राता अर्जुनराम मेघवाल, अर्थशास्त्री भ्राता एरनेस्टो कैस्टलनोस, केन्द्रीय कोयला व खान राज्यमंत्री हरिभाई चौधरी, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. शुक्ला बहन, ब्र.कु.पुष्पा बहन, केन्द्रीय विज्ञान और पर्यावरण मंत्री डॉ.हर्षवर्धन तथा अन्य।

प्रयागराज- 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. आशा बहन, उ.प्र.के गन्ना एवं चीनी मिल विकास मंत्री भ्राता सुरेश राणा तथा उनकी धर्मपत्नी बहन नीता राणा, ब्र.कु सरोज बहन, ब्र.कु राधा बहन तथा अन्य।

दिल्ली (हरिनगर)- 'मूल्य शिक्षा और अध्यात्म द्वारा खुशी बढ़ाने' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु चक्रधारी बहन, ब्र.कु शुक्ला बहन, ए.आई.सी.टी.ई के अध्यक्ष डॉ.भ्राता अनिल सहस्त्रबुधे, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, दिल्ली के शिक्षा मंत्री भ्राता मनीष सिसोदिया, डॉ.शकीला शमशु, एन.सी.ई.आर.टी के सचिव मेजर भ्राता हर्ष कुमार, जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार भ्राता ए.पी.सिद्दीकी, शिक्षा विभाग के उप निदेशक डॉ.भ्राता सुशील तथा अन्य।

1. रांची- 'शांति सरोवर' तथा प्रभु समर्पण समारोह का शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.भ्राता अमीरचंद, ब्र.कु.लक्ष्मी बहन तथा अन्य। **2. नई दिल्ली-** केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री भ्राता जे.पी नड्डा को सोविनियर भेंट करते हुए ब्र.कु.प्रकाश भाई। **3. उदयपुर-** 'नए समाज के नए आयाम' विषयक सम्मेलन का शुभारम्भ करते हुए रक्तदान महादान चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष भ्राता रवीन्द्र पाल सिंह कप्पू, भारत विकास परिषद् भामाशा के अध्यक्ष भ्राता मदनगोपाल, महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.उमाशंकर शर्मा, ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.आशा बहन तथा मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति भ्राता जे.पी शर्मा। **4. मलेशिया (जोहोर बाहरू)-** बिशप बर्नार्ड पॉल को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.अमीरचंद भाई। साथ में हैं ब्र.कु.मीरा बहन। **5. बीरगंज (नेपाल)-** नेपाल के गृहमंत्री भ्राता राम बहादुर थापा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रविना बहन। **6. इंदौर (प्रेमनगर)-** लोकनिर्माण तथा पर्यावरण मंत्री म.प्र शासन भ्राता सज्जन सिंह वर्मा को केबिनेट मंत्री बनने पर आत्म-स्मृति का तिलक लगाकर बधाई देते हुए ब्र.कु.शशी बहन। **7. डालटनगंज-** झारखण्ड विधानसभा अध्यक्ष भ्राता इंदर सिंह नामधारी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रजनी बहन। **8. भरतपुर-** महाराजा विश्वेन्द्र सिंह के राजस्थान के पर्यटन एवं देवस्थान मंत्री बनने पर बधाई देते हुए ब्र.कु.कविता बहन। **9. प्रयागराज-** कुम्भ मेले में आयोजित 'मॉडेला ग्लोबल समिट' का उद्घाटन करते हुए योगगुरु स्वामी रामदेवजी, स्वामी चिदानन्द सरस्वती महाराज, अम्मा करुणामयी साध्वी भगवत जी, ब्र.कु.बिन्नी बहन तथा अन्य।